कॉलेज और संघर्ष

जीवन का पहला और नया अध्याय

शांतनु

कॉलेज और संघर्ष

लेखक
शांतनु सिंह

"**कॉलेज और संघर्ष**" नामक पुस्तक मेरे प्रिय, कर्मठ, ईमानदार, परिश्रमी, प्रेरणास्त्रोत और मार्गदर्शक, पथ-प्रदर्शक और योग्य मित्र साहिल को समर्पित है। जिनके विद्यार्थी जीवन से मुझे हमेशा प्रेरणा मिलती रहती है।

शांतनु

लेखक परिचय

शांतनु एक सामान्य लेखक, कवि और आलोचक हुए हैं। इन्होंने सामाजिक और शैक्षणिक विषयों पर अपनी लेखनी चलाई। इनकी लेखनी पर बहुत से लोगों और परिस्थितियों का प्रभाव रहा है। इनका जन्म 19 जुलाई 2004 को हरियाणा प्रदेश के कैथल जिले के गांव कसौर में एक साधारण मध्यवर्गीय परिवार में हुआ। इनके माता-पिता क्रमशः श्रीमती श्यामो देवी और श्री प्रहलाद सिंह हैं। इनको शिक्षा दिलाने में इनकी पिता का सहयोग बहुत ही अमूल्य और चिरस्मरणीय है। इनकी पिता के संघर्षों के कारण प्राथमिक शिक्षा गांव की पाठशाला में ही हुई और उच्च शिक्षा के लिए राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, कसौर में गए। यहां से इंटरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण की। फिर इन्होंने स्नातक की शिक्षा के लिए डी.ए.वी कॉलेज, चीका में प्रवेश लिया। यहां पर एक प्रतिष्ठित और होनहार विद्यार्थी के रूप में अपनी पहचान बनाई। इन्होंने कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र से स्नातकोत्तर (अंग्रेजी) की उपाधि प्राप्त की। इन्होंने कॉलेज और विश्वविद्यालय स्तरीय विभिन्न कार्यक्रमों में अपनी भागीदारी सुनिश्चित की है। ये राष्ट्रीय सेवा योजना, रेडक्रास और अन्य सामाजिक संगठनों से जुड़े हुए हैं। इसी दौरान इन्होंने अपना अध्ययन-अध्यापन कार्य जारी रखा। इस तरह इनको बहुत-सी साहित्यिक संस्थाओं द्वारा साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में योगदान देने के कारण विभिन्न सम्मानों और पुरस्कारों से विभूषित किया जा चुका है।

शांतनु एक उभरते हुए लेखक हैं जिन्होंने कॉलेज जीवन के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया है। उनकी लेखन शैली सरल और प्रभावी होती है, जो पाठक को आसानी से समझ में आ जाती है। इन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से कॉलेज जीवन के संघर्षों का बेहतरीन ढंग से चित्रण किया है। इनकी रचनाओं में संघर्षों का विश्लेषण और उनका समाधान प्रस्तुत किया गया है। उनकी कहानियां यह दर्शाती है कि कैसे आत्मविश्वास, धैर्य और सकारात्मक दृष्टिकोण से इन चुनौतियों का सामना किया जा सकता है। इनका यह मानना है कि संघर्ष जीवन का एक अभिन्न अंग हैं और यह हमें मजबूत बनाने का प्रयास करते हैं। इनकी कहानियां इस बात का प्रमाण है कि कठिनाइयां अस्थायी होती है लेकिन उनसे मिलने वाली सीख स्थायी होती है।

इन्होंने बहुत सी पत्रिकाओं का संपादन भी किया। इनकी साहित्यिक रचनाओं में सहानुभूति, देशभक्ति और देशप्रेम की भावना, कर्मभूमि के लिए प्रेम, जनसाधारण के प्रति सद्भावना तथा रचनात्मकता जैसी विशेषताएं देखी जा सकती हैं। इनकी भाषा में एक प्रभाव देखा जा सकता है। इन्होंने आम बोलचाल के शब्दों के साथ-साथ साहित्यिक हिंदी भाषा का प्रयोग बड़े सहज ढंग से किया है। इनकी भाषा में सरलता, सहजता और समन्वय का पुट देखने को मिलता है। इन्होंने देशज, विदेशज और हरियाणवी शब्दों का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया है। इन्होंने विभिन्न शैलियों जैसे भावनात्मक, वर्णनात्मक और अभिव्यंजनात्मक आदि का प्रयोग किया है। इनकी साहित्यिक रचनाओं की भाषा सहज, सरल और भावानुकूल है। इस तरह ये अपने लेखन-कार्य और समाज-सेवा द्वारा अपने विचारों को प्रवाह दे रहे हैं। इनके द्वारा हिन्दी साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में दिए गए योगदान को हमेशा याद रखा जाएगा

लेखक की ओर से

जीवन को पूर्णता से जियें। जीवन के हर आयाम को जीने का प्रयास करिये। यह ईश्वर की सबसे अनमोल भेंट है। अतः हर उम्र में जो अच्छा है, उसे प्राप्त करिये और उसका आनंद लीजिए। बचपन में बचपन के आनन्द लीजिये, जवानी में जवानी के आनन्द लीजिये। प्रौढ़ावस्था में प्रौढ़ता का आनन्द लीजिये तथा वृद्धावस्था में वृद्धावस्था के आनन्द लीजिये। आपको यह पता होना चाहिये कि हर अवस्था के आनन्द क्या है? दूसरा, कॉलेज जीवन का असली अर्थ क्या है? यहाँ आये हो तो कुछ कर जाओ, जिसे लोग याद करें। आपने देश, समाज एवं मानवता के लिये क्या किया? प्रकृति के लिए क्या किया? उससे आपके जीवन जीने का सही अर्थ समझ आयेगा। यदि आपने कुछ किया है तो जीवन का सही मतलब है, आपने अच्छा जीवन जिया वरन् आप तो इस पृथ्वी पर व्यर्थ में बोझ ही थे। इस सन्दर्भ में कबीर दास जी ने ठीक कहा-

"कबीरा हम पैदा हुए, जग हँसे,
हम रोये ऐसी करनी कर चलो, हम हँसें, जग रोये।"

दो शब्द

मैंने अपने दोस्त साहिल के कॉलेज के जीवन पर किताब लिखने की कोशिश की, इसका कारण मेरे हृदय के विचार हैं जिन्होंने मुझे अंदर से झकझोर दिया कि मुझे किसी विद्यार्थी पर किताब लिखनी चाहिए। फिर सोचा कि इस किताब के लिए साहिल से उत्तम और प्रेरणा से भरपूर विद्यार्थी कौन हो सकता है? मेरा ख्याल है कि मेरी पुस्तक पढ़कर हमारे आसपास के विद्यार्थियों की जिन्दगी में आगे बढ़कर काम करने और कॉलेज जीवन को अच्छा बनाए रखने की प्रेरणा और उत्साह मिलेगा। इसके अलावा उन गलतफहमियों का खुलासा भी हो जाएगा जो लोगों ने कॉलेज जीवन के विषय में फैला रखी हैं। सामान्यतः विद्यार्थी कॉलेज और अपने बारे में विचार करते समय यह सोचते हैं कि इनती मेहनत-मशक्कत कर ही नहीं सकते, साथ ही भगवान उन पर कभी इतना मेहरबान नहीं हो सकता कि वे लोकप्रिय बन जाएँ। इसीलिए वे विद्यार्थी जीवन को नहीं अपनाते, बल्कि दिल ही दिल में कई तरह के डर बिठा लेते हैं। मैं अपनी पुस्तक के जरिए कॉलेज जीवन और संघर्ष जीवन का सच इसलिए जगजाहिर कर रहा हूँ ताकि विद्यार्थी यह जान सकें कि ऐसा कोई काम नहीं, जिसे वो न कर सके। हां कोई भी काम करने के लिए लगन, मेहनत और अपने आप पर दृढ़विश्वास की पूंजी अपने पास होनी चाहिए।

-शांतनु

मेरी किताब के बारे में

एक छात्र का जीवन युवावस्था, परिवर्तन और कई अवसरों से भरा होता है। इस दौरान छात्र अपनी पढ़ाई, दोस्ती और व्यक्तिगत विकास में बदलाव और अहम चुनौतियों का अनुभव करते हैं। छात्र अपने जीवन के शुरूआती चरणों में कई ऐसे सबक सीखते हैं जिन्हें वे जीवन भर याद रखते हैं। यह समझ साथियों, शिक्षकों और माता-पिता के बीच संबंध को भी बढ़ावा देती है। इस कहानी से हमें कॉलेज के उस खूबसूरत जीवन का पता चलता है कि कॉलेज में किस तरह हम सभी एक हो जाते हैं। हम जब कॉलेज में आते हैं तो सब एक-दूसरे से अनजान होते हैं और जब जाते हैं तो हर किसी के साथ एक रिश्ता बन जाता है। एक विद्यार्थी के लिए 'विद्यार्थी जीवन' को समझना आवश्यक है। इसलिए इस कहानी में 'विद्यार्थी जीवन' को साहिल नामक पात्र या विद्यार्थी के माध्यम से विस्तार से समझेंगे। यह कहानी एक ऐसे विद्यार्थी की है जो यह दर्शाती है कि कैसे अपनी शैक्षणिक सफ़र के दौरान कड़ी मेहनत की है तथा कैसे उसे इस यात्रा के दौरान अध्यापकों, दोस्तों और अंकलों का सहयोग मिला। इनकी कहानी दृढ़ संकल्प और नवाचार की मिसाल है। कॉलेज की यात्रा इनकी सफ़लता में एक महत्वपूर्ण पड़ाव रही। इस दौरान सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखने से उन अवसरों और पहलुओं की पहचान करने में मदद मिली, जो दूसरों को बाधा लगते रहे। इन्होंने अपनी सूझबूझ के साथ समस्याओं का समाधान किया। इन्होंने अपने कर्तव्यों और कार्यों द्वारा लोगों को अपने साथ जोड़ा जो बहुत ही प्रभावशाली व्यक्तित्व के तौर पर प्रतिष्ठित हुए। इनके जीवन में बहुत महत्वपूर्ण उतार चढ़ाव आए और इनके कारण ही साहिल को इनके साथ लड़ने की प्रेरणा मिलती रही। इन्होंने जो कुछ भी प्राप्त किया वह उनके समर्थकों के मार्गदर्शन का ही परिणाम है। इन सब तरह का प्रोत्साहन उनको गुरुजनों और मित्रों से प्राप्त हुआ। यहां पर दोस्ती की महफ़िल लग जाती है और अध्यापकों का अनुभव प्राप्त होता है। यह कहानी दर्शाती है कि वह किस तरह कॉलेज में जाता है? किस तरह का संघर्षपूर्ण जीवन जीता है? किस तरह मेरे दोस्त और अध्यापकों के साथ संवाद होते हैं? इन सब का परिचय आपको इस कहानी के माध्यम से होगा।
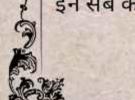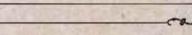
कॉलेज का जीवन हर युवा के लिए एक महत्वपूर्ण चरण होता है जिसमें उन्हें अनुभव, दोस्त और ज्ञान प्राप्त होता है। इसके साथ ही यह समय चुनौतियों और संघर्षों से भरा होता है जो व्यक्ति के व्यक्तित्व और क्षमता को परखता है। कॉलेज के जीवन में अनेक प्रकार के संघर्ष हो सकते हैं जैसे शैक्षणिक दबाव, आर्थिक चुनौतियां, स्वयं की पहचान और सामाजिक दबाव आदि जो एक छात्र को मानसिक और भावनात्मक रूप प्रभावित कर सकते हैं। कॉलेज जीवन से समय प्रबंधन करना, दोस्तों, परिवार और शिक्षकों की सहायता लेना और स्वयं पर विश्वास करना आदि सीखने को मिलता है। इसी तरह की स्थिति इस कहानी में देखने को मिलेगी। साहिल के पहले दिन की सुबह कुछ खास थी। उन्होंने पसंदीदा कपड़े पहने और दर्पण से खुद को देखकर एक नई उर्जा महसूस की। इन्होंने कॉलेज के दरवाजे पर पहुंचकर देखा कि वहां पर सभी छात्र और छात्राएं अपने अपने सपनों को लेकर आए थे। क्लासरूम में प्रवेश करते ही इन्होंने महसूस किया कि वहां पर वह अकेला नहीं था। बहुत से छात्र उनकी तरह नए थे और सबके चेहरे पर एक समान घबराहट थी। पहले दिन ही उन्होंने कुछ लोगों से जान पहचान बनाई। कॉलेज की पढ़ाई स्कूल से बिल्कुल अलग थी। वहां स्वाध्याय और आत्मनिर्भरता की बहुत आवश्यकता थी। प्रथम सेमेस्टर में इन्हें बहुत से विषयों में कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। लेकिन धीरे-धीरे इन्होंने उन पर विजय प्राप्त कर ली थी। इन्होंने जब कॉलेज में कदम रखा तो इनकी आंखों में उत्साह और मन में हजारों उलझनें थीं। इनके कॉलेज के अध्यापकों, दोस्तों और अंकलों ने साहिल के जीवन में एक अहम भूमिका निभाई। उनके मार्गदर्शन से न केवल साहिल की अकादमिक सफलता में योगदान दिया बल्कि इनके व्यक्तित्व को भी निखारा। इन्होंने साहिल को हमेशा प्रेरित किया और सपनों को साकार करने की दिशा में इनका समर्थन किया। कॉलेज के जीवन ने साहिल को सिर्फ शिक्षा ही नहीं, बल्कि जीवन के कई महत्वपूर्ण सबक भी सिखाए। इन्होंने यहां दोस्ती, मेहनत, संघर्ष और सफलता के वास्तविक मायने सीखें। प्रारंभ में कठिन विषयों और असाइनमेंट्स ने इनको परेशान किया, लेकिन समय के साथ उन्होंने प्रबंधन करना सीख लिया। इनके कॉलेज की यात्रा केवल शैक्षणिक यात्रा नहीं थीं, बल्कि जीवन की एक ऐसी यात्रा थी जिसने साहिल को एक बेहतरीन इंसान बनाया।

साहिल बताते हैं कि किस तरह उन्होंने इनका सामना किया और विषयों का चयन किया। कॉलेज में नए दोस्त बनाना और सामाजिक समूहों में तालमेल बनाना भी एक चुनौती रही। साहिल ने सुझाव दिया है कि छात्रों को अपनी रुचियों के अनुसार संगठनों और संस्थाओं में शामिल होना चाहिए ताकि वे समान विचारधारा वाले लोगों से मिल सके। कॉलेज की दुनिया में संघर्ष भी होते हैं, लेकिन सही दृष्टिकोण और रणनीतियों से इनका सामना किया जा सकता है। यह समय नई दोस्ती, नए अनुभव और अनगिनत चुनौतियों का होता है लेकिन इस सफर में संघर्ष भी उतना ही महत्वपूर्ण हो जाता है जितनी की सफलता। कॉलेज में प्रवेश के साथ ही छात्रों को अपनी पहचान बनाने का अवसर मिलता है। यहां की स्वतंत्रता और नये नये विषयों का अध्धयन करना उत्साहजनक होता है। लेकिन इसके साथ ही जिम्मेदारियां भी बढ़ जाती हैं। कॉलेज का पहला साल नई उम्मीदों और चुनौतियों से भरा होता है। इस साल में अपनी पहचान बनाने के लिए हर तरह की गतिविधियों में शामिल होना और अध्यापकों और दोस्तों के साथ समन्वय स्थापित करना भी एक विद्यार्थी के लिए आवश्यक हो जाता है।इस समय इन्होंने नए माहौल के साथ तालमेल बनाना पड़ा। यह एक अद्वितीय अनुभव रहा जो इनको न केवल शैक्षणिक ज्ञान, बल्कि जीवन के बहुमूल्य सबक भी सिखाने वाला था। कॉलेज और उससे जुड़े हुए लोगों ने इनके व्यक्तित्व को निखारने में अहम भूमिका निभाई। इन्होंने विभिन्न कार्यक्रमों, संगठनों और क्लबों में प्रतिभागिता करके अपने कौशल को बढ़ाया। कॉलेज के दोस्तों की दोस्ती जीवनभर के लिए महत्वपूर्ण साबित हुई। इन्होंने शैक्षणिक क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। वह हमेशा अपने विषयों में गहरी रुचि लेता था और अपने शिक्षकों के साथ तालमेल बनाए रखता था। इनकी कड़ी मेहनत और समर्पण ने इनको कॉलेज के शीर्ष छात्रों में शामिल किया। कॉलेज के अंतिम वर्षों इन्होंने अपने भविष्य के लिए स्पष्ट दिशा निर्धारित की। इस तरह इनके कॉलेज की यात्रा संपन्न हुई। इनके जीवन में कॉलेज का अनुभव एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। यह समय इनके व्यक्तिगत और पेशेवर विकास का अहम हिस्सा बना। कॉलेज में दाखिला लेते ही इन्होंने आत्मनिर्भरता का पहला पाठ सीखा। घर से दूर रहते हुए उन्हें अपनी दिनचर्या खुद निर्धारित करनी पड़ी। यह अनुभव इनको जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने और आत्मनिर्भर बनने में सहायक सिद्ध हुआ।

ये कौशल न केवल इनके व्यक्तिगत जीवन में बल्कि मेरे पेशेवर जीवन में भी अत्यंत महत्वपूर्ण साबित हुए। कॉलेज ने साहिल को करियर के विभिन्न अवसरों से अवगत कराया। इससे इन्हें विषय समझने में मदद मिली कि वह किस तरह अपने करियर को किस दिशा में ले जाना चाहते है। कॉलेज के अनुभवों ने साहिल के व्यक्तित्व को निखारा। इन्होंने आत्मविश्वास में वृद्धि की और अपनी पहचान बनाई। विभिन्न सेमिनार और वर्कशॉप में भाग लेकर इन्होंने अपने व्यक्तित्व को और परिष्कृत किया। इनके लिए कॉलेज का समय केवल पढ़ाई तक सीमित नहीं था। यह एक समग्र विकास का समय था जहां इन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में निपुणता हासिल की। इसने साहिल को जीवन समाज के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण और नई सोच प्रदान की। कुल मिलाकर, साहिल के जीवन में कॉलेज का योगदान बहुआयामी था।

तो आइए जानते हैं कि कॉलेज ने साहिल के जीवन में क्या-क्या योगदान दिए।

कॉलेज का पहला दिन

01/09/2022

डीएवी एक ऐसी संस्था है जिसने युवाओं को दयानंद सरस्वती जी के विचारों से अवगत कराने और उनको अपने जीवन में लागू करने का कार्य किया है। इस संस्था की पहली शाखा लाहौर में खुली थी और उसके पश्चात देश विदेश के हर हिस्से में विभिन्न केन्द्र स्थापित किए गए। इसी तरह ही डीएवी संस्था की स्थापना 29 अप्रैल,1983 को आदरणीय वेदव्यास जी, समकालीन अध्यक्ष डीएवी कॉलेज प्रबंधन कमेटी, नई दिल्ली द्वारा की गई थी। पूर्व एमएलए गुहला चौधरी दिल्लू राम, अमरनाथ जिंदल, श्री अमरनाथ गोयल जैसे महान और उत्साही लोगों ने डीएवी कॉलेज, चीका की स्थापना के लिए विवेक और कठोर प्रयास किए। हरियाणा के तत्कालीन मुख्यमंत्री भवान लाल जी ने 16 सितंबर, 1983 को डीएवी कॉलेज, चीका की आधारशिला रखी। पहले शैक्षणिक सत्र में भवानी मंदिर धर्मशाला, चीका में 133 विद्यार्थियों के साथ शुरू किया गया था, जबकि आज वर्तमान में 1500 से अधिक विद्यार्थी पंजीकृत हैं। डीएवी संस्था के शिक्षा के क्षेत्र में दिए गए योगदान अतुलनीय और अमूल्य है। इसके स्थायी योगदान को सभी ने एक शताब्दी से भी अधिक समय से न केवल भारत में, बल्कि विदेशों में भी स्वीकार किया है। यह संस्था देश-विदेश में 700 से अधिक शैक्षणिक संस्थानों का संचालन कर रही है। डीएवी कॉलेज, चीका के विद्यार्थी यहां से अपनी शिक्षा पूरी करके बड़े-बड़े पदों पर कार्यरत हैं।

ये आज भी अपने कॉलेज के साथ जुड़े हुए हैं। इस कॉलेज के द्वारा बहुत से सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक कार्यक्रमों को बखूबी सफल किया गया है जिनमें विद्यार्थियों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। इसी तरह के कार्यों में साहिल ने सफलता हासिल की है। जैसा कि आप लोगों को आगे चलकर साहिल के बारे में जानने को मिलेगा कि किस तरह वह अपनी मेहनत, बुद्धि और विवेक के बल पर लोगों के दिलों में जगह बनाता है। डीएवी कॉलेज, चीका साहिल के लिए सिर्फ एक संस्था नहीं रही, बल्कि जीवन में महत्वपूर्ण साबित हुआ।

इनका जन्म 2 अगस्त 2004 को हरियाणा प्रदेश के कैथल जिले के गांव थेह बनेहड़ा में एक साधारण परिवार के घर पर हुआ। इनके माता-पिता क्रमशः श्रीमती ओमी देवी और श्री बीर सिंह हैं। इनको शिक्षा दिलाने में इनकी माता का सहयोग बहुत ही अमूल्य और चिरस्मरणीय है। इनकी माता के संघर्षों के कारण प्राथमिक शिक्षा गांव की पाठशाला में ही हुई और उच्च शिक्षा के लिए राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बलबेहड़ा में गए। यहां से इंटरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण की। फिर इन्होंने स्नातक की शिक्षा के लिए डी.ए.वी कॉलेज, चीका में प्रवेश लिया। यहां पर एक प्रतिष्ठित और होनहार विद्यार्थी के रूप में अपनी पहचान बनाई। इन्होंने कॉलेज और विश्वविद्यालय स्तरीय विभिन्न कार्यक्रमों में अपनी भागीदारी सुनिश्चित की है। ये राष्ट्रीय सेवा योजना, रेडक्रास और अन्य सामाजिक संगठनों से जुड़े हुए हैं। इस तरह इनको बहुत-सी साहित्यिक संस्थाओं द्वारा साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में योगदान देने के कारण विभिन्न सम्मानों और पुरस्कारों से विभूषित किया जा चुका है। इन्होंने बहुत-सी रचनाओं द्वारा अपनी लेखनी और साहित्य को प्रफुल्लित किया। साहिल का गांव चीका से 10-12 किलोमीटर दूर है। जो बलबेहड़ा गांव से आगे निकल कर अवस्थित है। यहां पर जन्मे साहिल ने जैसे तैसे करके अपनी पढ़ाई पूरी करने का निश्चय किया। आरंभ में तो उसे पाठशाला में जाना पड़ा और फिर वह पास के गांव बलबेहडा में इंटरमीडिएट तक की शिक्षा ग्रहण करने के लिए गया। यहां पर एक प्रतिष्ठित विद्यार्थी के रूप में अपनी पहचान बनाई। प्रतिदिन स्कूल में जाना और अपना काम पूरी निष्ठा और ईमानदारी से करना। यहां पर वह सभी का प्रिय बन गया। वहां पर प्रतिदिन साइकिल चलाकर जाता रहा और फिर अच्छे अंक लेकर 12वीं कक्षा उत्तीर्ण की। "साइकिल" की भी एक कहानी रही है। जिसके बारे में आगे चलकर विस्तार से बताया गया है । अब साहिल के जीवन का एक विशेष और महत्वपूर्ण अध्याय शुरू हुआ। जब साहिल ने कॉलेज में जाने के लिए सोचा तो अनेकों सवाल थे। कौन से कॉलेज में प्रवेश लिया जाए? वहां पर क्या करूंगा? क्या वह कॉलेज के लोगों के साथ तालमेल बना पायेगा? फिर आखिरकार इन्होंने अपना निश्चय कर लिया कि देखा जायेगा कॉलेज के लिए पंजीकरण करवाया और पहली बार में ही लिस्ट में नाम भी आ गया। जिसमें कॉलेज पता कौन सा आया? वो कॉलेज था "डीएवी कॉलेज, चीका"।

फिर अब बारी आई फ़ीस जमा करवाने की और साहिल कॉलेज में चल दिया इस दिन उसको कॉलेज में सबसे पहले डॉ० राजेन्द्र सिंह और नरेंद्र सिंह मिले। इनके पास फीस जमा करवाई और इस तरह एडमिशन लिया। इस कॉलेज से साहिल के जीवन के ऐसे सफ़र की शुरुआत हुई जिसने साहिल का ताउम्र साथ दिया। इसने साहिल को प्यार, स्नेह, अनुभव और अनगिनत विचार दिए हैं। इन्होंने साहिल के व्यक्तित्व विकास में सहायक की भूमिका निभाई है। अब बारी आई कॉलेज में पहले दिन जाने की। वह सुबह सुबह उठते ही अपने प्रतिदिन के कार्यों से निवृत्त होकर ने कपड़े पहनने के पश्चात दर्पण में अपने आपको देखता है कि कहीं कोई कमी तो नहीं रह गई। यहां पर साहिल का विचार था कि जितनी मेरे पहनावे की सुंदरता है। वैसे ही उसके विचार भी उच्चस्तरीय होने चाहिए। उसके पश्चात अब कॉलेज जाने के लिए निकला अब यह समस्या आई कि कॉलेज कैसे जाया जाए फिर उसको साइकिल दिखाई दिया और उसको उठाया, फिर साहिल चल दिया। यही से "साइकिल" की कहानी शुरू होती है। कुछ दिनों तक साहिल को अटपटा सा लगता रहा। लेकिन बाद में सभी को साहिल का साइकिल पर जाना अच्छा लगा और उसकी सरहाना भी की। इसने साहिल का आजतक एक दोस्त की तरह साथ दिया है। अब साहिल 1 सितंबर, 2022 को 8:30 बजे के करीब डीएवी कॉलेज, चीका के प्रवेश द्वार पर पहुंचा। तो वहां पर देखा कि वहां पर बहुत से छात्र और छात्राएं खड़ी हैं तथा वो भी अपने सपनों को साकार करने के लिए आये हुए हैं। उन्हीं में से साहिल एक था। उस दिन साहिल असमंजस में पड़ गया कि किससे बात की जाए। फिर उसने सोचा की उन्हीं से बात की जाए जो दाखिले के दौरान मिले। इस दिन कॉलेज में हवन-यज्ञ करवाया गया जिसमें साहिल एक ऐसा विद्यार्थी था जिसने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। यहां पर साहिल के समक्ष उच्च शिक्षक बैठे हुए थे। यहां पर उसकी आज्ञाकारिता और संस्कृति के प्रति सम्मान दिखाई दिया। इसी तरह के कार्यों के कारण वह सभी का प्रिय विद्यार्थी बन गया। इस तरह साहिल का पहला दिन कॉलेज में बीता। हर रोज साहिल साइकिल चलाकर कॉलेज में आता रहा।

कभी-कभी उसकी साइकिल खराब हो जाती थी तो साहिल को कठिनाई आ जाती थी लेकिन उसके धैर्य और संयम ने सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखने का प्रयास किया। इसलिए लोगों ने उसको एक साइकिल चलाने वाले संघर्षशील विद्यार्थी के रूप में प्रसिद्ध किया। साहिल हमेशा से ही एक उत्साही और सक्रिय छात्र रहा था। कॉलेज में कदम रखते ही, उसने महसूस किया कि यह सिर्फ़ पढ़ाई करने की जगह नहीं, बल्कि अपनी रुचियों को आगे बढ़ाने और कुछ नया करने का भी मंच है। साहिल कॉलेज की साहित्यिक सभा में शामिल हुआ। उसे कविताएँ लिखने और सुनाने का शौक था, और इस मंच ने उसे अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर दिया। धीरे-धीरे, वह सभा के सक्रिय सदस्यों में से एक बन गया और कई कार्यक्रमों के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

साहिल का कॉलेज जीवन सिर्फ़ अकादमिक रूप से ही सफल नहीं रहा, बल्कि उसने विभिन्न पाठ्येतर गतिविधियों में भी अपनी पहचान बनाई। उसने न केवल अपनी प्रतिभा का विकास किया, बल्कि अन्य छात्रों को भी प्रेरित किया और कॉलेज के समुदाय में एक सकारात्मक योगदान दिया। साहिल की कहानी यह दर्शाती है कि कॉलेज का समय सिर्फ़ डिग्री हासिल करने के लिए नहीं होता, बल्कि यह अपने व्यक्तित्व को निखारने और समाज में अपना योगदान देने का भी एक महत्वपूर्ण अवसर होता है। यह ऐसा समय था जब साहिल सिर्फ अपने में ही खोया रहता था और दूसरों से इतना तालमेल और बोलचाल भी नहीं थी। सबसे पहले इंग्लिश की प्रो० सुनीता देवी और राजनीति विज्ञान के अध्यापक प्रो० नीरज सिंह के परिचय से शुरूआत हुई। आगे चलकर जैसे-जैसे कक्षाएं शुरू हुई वैसे-वैसे हिंदी के अध्यापक श्री जसबीर सिंह और सुनील कुमार तथा इतिहास के अध्यापक राजेंद्र सिंह से परिचित हुआ। उसने अन्य छात्रों को भी अपनी रचनात्मकता को व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया। तीसरे वर्ष में, साहिल ने कॉलेज की नाट्य मंडली में भाग लिया। उसे अभिनय में रुचि थी और उसने कई नाटकों में अलग-अलग किरदार निभाए
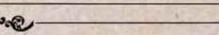
उसकी मेहनत और लगन ने उसे एक अच्छा कलाकार बना दिया, और उसके अभिनय की काफी सराहना हुई। नाट्य मंडली के साथ, उसने अंतर-कॉलेज नाटकों में भी भाग लिया और अपनी कॉलेज का नाम रोशन किया। पढ़ाई के साथ-साथ, साहिल सामाजिक कार्यों में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेता था। उसने कॉलेज के राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) इकाई में स्वयंसेवा की और कई सामाजिक जागरूकता अभियानों में सक्रिय रूप से भाग लिया। उसने रक्तदान शिविरों का आयोजन किया, स्वच्छता अभियानों में योगदान दिया, और गरीब बच्चों की शिक्षा के लिए धन जुटाने में मदद की। अपने अंतिम वर्षों में, साहिल को कॉलेज की विभिन्न परिषदों का नेतृत्वकर्ता चुना गया। यह उसके समर्पण और नेतृत्व क्षमता का प्रमाण था। उसने कॉलेज में कई नए कार्यक्रमों और गतिविधियों की शुरुआत की, जिससे छात्रों के बीच उत्साह और सहयोग की भावना बढ़ी। जब पहले दिन प्रो० सुनीता देवी ने कक्षा लगाई थी तो साहिल को उनके पढ़ाने का तरीका पता नहीं था। इनसे जब इन्होंने पढ़ा तो ऐसा लगता था कि इतनी सरलता से कहीं भी नहीं समझ में आ सकता। इन्होंने सरल भाषा में अंग्रेजी विषय को पढ़ाने का भरपूर प्रयास किया। पहली बार कठिनाई आई लेकिन बाद में सब अच्छे से समझ में आने लगा। इसी तरह जब राजनीति विज्ञान विषय के प्रोफेसर नीरज सिंह ने बड़ी सरलता के साथ इन्हें पढ़ाया और इन्हें पठन सामग्री भी उपलब्ध कराई। ये बड़े सहायक प्रवृत्ति के सिद्ध हुए। इन्होंने आज तक बहुत मदद की है। दूसरी ओर इतिहास विषय की कक्षा में और भी आनंद आया क्योंकि डॉ० राजेन्द्र सिंह सभी बच्चों से लिखवाया करते थे और वो इनका भी चाव रहा है। इसी कारण से साहिल की लेखन कला का विकास हुआ। फिर हिन्दी विषय की कक्षा में डॉ० जसबीर सिंह जी से मुलाकात हुई तो इनके चरित्र के बारे में जाना कि ये चरित्र के बड़े धनी व्यक्ति हुए हैं। इनकी वाणी में कोमलता और सम्मान दिखाई दिया। इन्होंने हर विषय को बड़ी गहराई से समझाया। जब ये पढ़ाते हैं तो इनकी कक्षा कक्ष में से साहिल का जाने का मन ही नहीं करता । ये तल्लीन हो जाते थे। इस तरह इनकी आरंभिक स्थिति रही और कक्षाओं में अपनी उपस्थिति बनाए रखी। कुछ समय बाद डॉ० सुनील कुमार के स्थान पर प्रो० ज्योति रानी आई और वे इनकी हिन्दी की कक्षाएं लेने लगी। उनके साथ भी बोलचाल बढ़ी और वे साहिल की प्रतिभा से प्रभावित हुईं। इसके बाद पहले सेमेस्टर की परीक्षा आ गई। जैसे-तैसे इन्होंने विषयों के बारे में जानकारी प्राप्त की और परीक्षा दी। दूसरे सेमेस्टर के दौरान इनको कुछ हद तक जानकारी प्राप्त होती गई और विषयों को समझने में आसानी हो गई।

अब इनको लाइब्रेरी का पता चला और उसकी कार्यप्रणाली के बारे में इन्होंने जानकारी प्राप्त की तथा उसको समय देना शुरू कर दिया। इस दौरान कुछ दोस्त बनाएं और अभी तक कोई भी पक्का दोस्त नहीं था सिर्फ अपने काम को निकालने के लिए एक दूसरे के साथ रहते थे।

14 दिसंबर, 2022 इस दिन साहिल ने जीवन में पहली बार एनएसएस शिविर में भाग लिया। यह उसके जीवन का पहला और नया शिविर था क्योंकि उनको एनएसएस के बारे में पहली बार जानकारी प्राप्त हुई थी। इस दिन साहिल ने सभी स्वयंसेवकों के साथ मिलकर कॉलेज के प्रांगण की सफाई की। यहां से उसको सफाई अभियान, एनएसएस के कार्यों, उद्देश्यों और महत्व का ज्ञान हुआ। यहां पर साहिल के अध्यापक डॉ० राजेन्द्र सिंह, डॉ० वीरेंद्र पाल, प्रो० अवतार सिंह, प्रो० ज्योति रानी, प्रो० कुणाल वर्मा इत्यादि मौजूद रहे थे। यहां से साहिल के एनएसएस दौर की शुरुआत हुई।

08 फरवरी 2023 डीएवी कॉलेज, चीका में नशा मुक्ति अभियान के तहत नशा मुक्त प्रकोष्ठ द्वारा एसएचओ के व्याख्यान का आयोजन किया। उन्होंने साहिल समेत सभी विद्यार्थियों को नशे के दुष्परिणामों की जानकारी दी। यहां से साहिल को जीवन में पहली बार पुलिसकर्मियों से बातचीत करने का अवसर मिला और जो उनके अंदर एक पुलिस के प्रति भय था वह दूर हो गया। इन्होंने कहा कि आमजन या बच्चों को पुलिसकर्मियों से डरने की जरूरत नहीं है तथा नशा मुक्ति अभियान को सफल बनाने के लिए उसमें योगदान आवश्यक है। यहां से साहिल के बारे में यह पता चलता है कि किस तरह उसके जीवन में कार्यक्रमों का उद्घोष हुआ। इनमें साहिल ने प्रतिभागिता और सक्रियता दिखाई। इनके साथ साथ पढ़ाई भी की। यहां तक पहुंचते पहुंचते साहिल का परिचय लगभग सभी अध्यापकों से हो गया था।
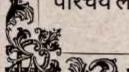
11 फरवरी से 16 फरवरी 2023 तक इन्होंने एनएसएस शिविर लगाए। इनको एनएसएस का पता चला और यह किस तरह काम करती है। इसके शिविरों का अनुभव बहुत ही सुंदर और आकर्षक रहा। इसमें एक दूसरे स्वयंसेवकों के बारे में जानने का मौका मिला। इस दौरान का अनुभव साहिल के लिए बहुत लाभदायक और प्रभावी रहा। इसके साथ साहिल जीवनभर के लिए जुड़ा रहा। एनएसएस ने साहिल के लक्ष्यों को प्रवाह दिया। इस पहले शिविर में इन्होंने बहुत समाज सेवा के कार्य किए। विभिन्न तरह के व्यक्तियों से भेंट करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और उनके विचारों को जानने के लिए भी उत्साहित हुए। यह उत्साह साहिल के जीवन का एक रास्ता बना। इस दिन साहिल ने एनएसएस के सात दिवसीय शिविर में भाग लिया। यहां पर सातों दिन विभिन्न तरह की गतिविधियां देखने को मिली। इसमें एनएसएस के कार्यक्रमों, महत्व और उपयोगिता, जिम्मेदारियों और कर्तव्यों के बारे में जानकारी प्राप्त की। इन्होंने मिलकर कॉलेज प्रांगण और सार्वजनिक अस्पताल, गुहला की साफ सफाई की तथा जनजागृति रैलियों में प्रतिभागिता की। यहां इस दौरान एनएसएस से जुड़े होने पर गर्व हुआ। साहिल इसकी वजह से ही समाज सेवा और मानवीय मूल्यों की ओर आकर्षित हुआ। उसके मन में समाज कल्याण और शिक्षा के क्षेत्र में योगदान देने के विचार आए। यहां से साहिल की समाजवादी और देशप्रेम की भावना की झलक दिखाई दी।

29 फरवरी 2023 इस दिन एनएसएस के एक दिवसीय शिविर में साहिल ने भाग लिया। यहां पर मुख्य अतिथि के रूप में प्रसिद्ध राजनीतिक विज्ञान के विशेषज्ञ डॉ० नीरज सिंह ने शिरकत की। इन्होंने साहिल समेत सभी विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि संविधान केवल एक पुस्तक नहीं है, बल्कि हमारे देश की नींव है। यहां से साहिल की उत्सुकता संविधान के लिए बढ़ गई उसने संविधान के इतिहास को जाना जिसके फलस्वरूप ही उसने आगे चलकर प्रतिभा खोज प्रतियोगिता के अवसर पर आयोजित संविधान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में प्रतिभागिता करके द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

30 मार्च 2023 को डीएवी कॉलेज, चीका में एक दिवसीय एनएसएस शिविर आयोजित किया गया जिसमें साहिल ने बहुत मौज-मस्ती करते हुए ज्ञान भी प्राप्त किया।
आगे चलकर दूसरे सेमेस्टर की परीक्षा आ गई और पहले सेमेस्टर का परिणाम आया। इसमें साहिल ने यह पाया कि किस तरह से आगामी परीक्षाएं देंगे। फिर नयी कक्षा में पहुंचा और इस दौरान इन्हें यह पता चला कि प्रतियोगिता किसे कहते हैं।
तीसरे सेमेस्टर तक पहुंचते-पहुंचते साहिल की अनेकों लोगों से जान पहचान हुई। इनके साथ बोलचाल होने लगी जो आगे चलकर इनके जीवन के अहम भाग बन गए। इन्होंने साहिल के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस शिविर में साहिल ने श्रोता और स्वयंसेवक के रूप में प्रतिभागिता की। यहां पर उसको डीएसपी. सुनील कुमार से मिलने का मौका मिला। इन्होंने कहा कि साइबर अपराध के बचाव के उपायों के प्रति आप स्वयं भी जागरूक हों और दोस्तों व रिश्तेदारों को भी इनके बारे में जानकारी दें। इस विषय पर साहिल ने निःसंकोच होकर सुनील कुमार जी से सवाल पूछे और उनके जवाब बड़े सकारात्मक थे। इन्होंने साहिल समेत सभी विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनने के लिए प्रोत्साहित किया ताकि वह भविष्य में आने वाली चुनौतियों का डटकर मुकाबला कर सकें।

16 सितंबर 2023 को इन्होंने पहली बार प्रो० नीरज सिंह के द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में भाग लिया और तीसरा स्थान हासिल किया। इससे पहले भी साहिल ने एनएसएस शिविरों में होने वाली प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता की। यह साहिल के जीवन की महान उपलब्धियों में से एक है। इसके प्रोत्साहन से प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता करने का सिलसिला जारी हो गया। धीरे-धीरे प्रतियोगिताएं आयोजित होने लगी और उनमें साहिल अपने हुनर को बिखेरता गया। यहां पर साहिल को बहुत खुशी हुई कि उसने अपने विद्यार्थी जीवन में किसी प्रतियोगिता में प्रतिभागिता की।

यही पहल उसके जीवन में पहला और महत्वपूर्ण पड़ाव साबित हुई। यहीं से उसको प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता करने का प्रोत्साहन मिला। यहां पर प्रो० नीरज सिंह ने साहिल को सम्मानित करते हुए उसके उज्जवल भविष्य की कामना की तथा भविष्य में होने वाली प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहित किया। इनका साहिल के जीवन में अमूल्य योगदान रहा है। इसीलिए राजनीति विज्ञान परिषद् की हर गतिविधि में शामिल होने का निश्चय किया।

इससे इनके हुनर और कला को एक पथ मिला। इस संबंध में यह पंक्तियां पूर्णतः सार्थक हैं:-

जीवन में असली उड़ान अब भी बाकी है,
मेरे इरादों का इम्तिहान अब भी बाकी है,
अभी तो नापी है मुट्ठी भर जमीन मैंने,
अभी तो नापने के लिए पूरा आसमान बाकी है।

इन पंक्तियों ने साहिल को प्रोत्साहित किया और वह बढ़ चला अपनी मंजिल की तरफ। **30 सितंबर 2023** को महात्मा गांधी जी की जयंती के उपलक्ष में राजनीति विज्ञान परिषद् द्वारा आयोजित "निबंध लेखन प्रतियोगिता" में साहिल ने भाग लिया और दूसरा स्थान प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता से इन्होंने महात्मा गांधी जी के उन पहलुओं को जाना, जो उनके महत्व को महान् बनाए रखें हुए हैं। महात्मा गांधी जी के इन प्रभावशाली विचारों ने इनको बहुत प्रोत्साहित किया। इस प्रतियोगिता में साहिल ने महात्मा गांधी जी के विचारों को और ज्यादा समीप से देखा। सत्य के साथ गांधी जी के प्रयोगों ने उनके इस विश्वास को पक्का कर दिया था कि सत्य की हमेशा विजय होती है। आज मानव की मुक्ति सत्य का रास्ता अपनाने से ही है। आज साहिल भी महात्मा गांधी जी के विचारों का पालन अपने जीवन में करते दिखाई देते हैं। इन्होंने कॉलेज में भी इसी प्रवृत्ति को बनाए रखा है। यहां पर साहिल की महान व्यक्तियों के विचारों के प्रति सम्मान की भावना देखने को मिली।

11 अक्तूबर 2023 को राजनीति विज्ञान परिषद् द्वारा "जी-20 समिट" पर आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में भाग लिया और तीसरा स्थान प्राप्त किया। इस दौरान साहिल ने जी 20 का वास्तविक अर्थ ज्ञात किया। यह एक उत्तम और प्रभावी संगठन रहा है जिसने विश्व को वसुधैवकटुंबकम् का अर्थ और उद्देश्य समझाया। इसकी संरचना विविधता में एकता की परिचायक है। यहां पर साहिल को जी-20 प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में प्रतिभागिता करने के पश्चात इसके संगठन, कार्यों और विश्वस्तरीय महत्व की अभिन्न जानकारी प्राप्त हुई। इसमें शामिल देशों के बारे में पता चला और अपने ज्ञान में बढ़ोतरी की। इसके इतिहास से साहिल को "विश्व परिवार" की भावना का अमूल्य ज्ञान प्राप्त हुआ। इसी कारण उसका मन समाज की ओर विमुख हुआ जो उसके जीवन में आगे चलकर काम आया।

20 अक्टूबर 2023 को डीएवी कॉलेज, चीका की हिंदी साहित्य परिषद् और हिंदी विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित "हिंदी साहित्य प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता" में साहिल ने प्रतिभागिता की और प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस उपलब्धि पर डॉ० जसबीर सिंह, प्रो० अवतार सिंह, प्रो० नीरज सिंह, प्रो० सुनीता, प्रो० ज्योति, प्रो० जसबीर कौर और प्रो० रीतू ने सम्मानित किया। यह प्रतियोगिता साहिल की हिंदी साहित्य के प्रति प्रेम और रूचि बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुई। इसकी वजह से उसको हिंदी साहित्य के महान व्यक्तियों और उनकी रचनाओं के बारे में जानकारी जुटाने का मौका मिला। यह साहिल के साहित्यिक दौर का पहला पड़ाव रहा। इस प्रतियोगिता से साहिल को हिंदी साहित्य की ओर जाने का अवसर प्राप्त हुआ। इन पर विद्यालय के समय से हिंदी के अध्यापकों का प्रभाव रहा। उन्होंने हिंदी साहित्य की तरफ बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। कॉलेज में भी इस तरह की प्रतियोगिता और हिंदी साहित्य से जुड़े व्यक्तियों जिनमें उल्लेखनीय हैं- डॉ० जसबीर सिंह, डॉ० सुनील कुमार और प्रो० ज्योति रानी ने साहिल को हिंदी साहित्य का जीवन में महत्व बताया और उसने इसी रास्ते पर चलना शुरू कर दिया।

31 अक्टूबर 2023 इस कार्यक्रम में साहिल ने साइबर सुरक्षा के संबंध में जानकारी प्राप्त की। इस दौरान इन्होंने साइबर अपराध इकाई से आई पीएसआई शुभ्रांशु की टीम से साइबर सुरक्षा का प्रशिक्षण लिया और वर्तमान में इसके प्रति अपनी जानकारी में वृद्धि कर रहे हैं। इन्होंने जानकारी देते हुए कहा कि साइबर सुरक्षा के लिए जरूरी है कि मजबूत सुरक्षा व्यवस्था और सोशल मीडिया का सावधानीपूर्वक किया जाए। यहां से साहिल को तकनीकी ज्ञान और सुरक्षा की जानकारी प्राप्त हुई।

06 नवंबर 2023 इस दिन साहिल ने ईको क्लब और एनएसएस के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित पर्यावरण चेतना कार्यक्रम में हिस्सा लिया जिसका आयोजन प्रो० नीरज सिंह, प्रो० वीरेंद्र सिंह, प्रो० ज्योति रानी और प्रो० रीतू ने किया। यहां से साहिल को एक संक्षिप्त फिल्म के द्वारा पर्यावरण संरक्षण की अहमियत पता चली। यही नहीं उसे सेमिनार हॉल के तकनीकी यंत्रों और अन्य चीजों के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। इसी के कारण साहिल के होते हुए कभी भी तकनीकी यंत्रों को चलाने में कोई चुनौती नहीं देखी गई।

9 नवंबर 2023 को डीएवी कॉलेज, पेहवा में हिंदी साहित्य परिषद् द्वारा आयोजित पृथुद्क उत्सव 2023 में भाग लिया और पुरस्कार प्राप्त किया। इस दौरान साहिल के साथ प्रीती, बबन, दिव्या, रमन, अमन, रज्जो, मनीषा ने प्रतियोगिता में भाग लिया। साहिल के हिन्दी के अध्यापक सुनील कुमार ने उनको सम्मानित किया और प्रशंसा भी की। आगे चलकर कॉलेज के अध्यापकों, कर्मचारियों और सहयोगियों आदि से अच्छी तरह से जान पहचान और बढ़ी। इसी दौरान तीसरे सेमेस्टर की परीक्षा शुरू होने ही वाली थी और दूसरे सेमेस्टर का परीक्षा परिणाम आया, जिसमें कुछ अच्छा प्रदर्शन किया। यहां पर बहुत से महाविद्यालयों से विद्यार्थी आए जिन्होंने अपनी प्रतिभाओं का प्रदर्शन किया। यहां से साहिल को हिंदी साहित्य के संबंध में विस्तृत जानकारी मिली। विभिन्न तरह के विचारों को जानने का अवसर मिला। इन सबके लिए प्रो० ज्योति रानी का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इनके कारण ही साहिल और अन्य पृथुद्क उत्सव में भाग ले पाये।

नये वर्ष में प्रवेश किया और 12 **जनवरी** 2024 को स्वामी विवेकानंद जी की जयंती या राष्ट्रीय युवा दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित भाषण प्रतियोगिता में प्रतिभागिता कर दूसरा स्थान हासिल किया। इस प्रतियोगिता से साहिल को स्वामी विवेकानंद जी के जीवन से अवगत होने का अवसर मिला। इनके जीवन के गहरे अनुभवों ने साहिल को बहुत प्रोत्साहित किया। ये युवाओं के प्रेरणास्त्रोत हुए हैं। इन्होंने युवाओं को राष्ट्र की नींव बताया और देशभक्ति करने के लिए प्रोत्साहित किया। इस दौरान डॉ० जसबीर सिंह, डॉ० राजेंद्र सिंह, डॉ० वीरेंद्र पाल और डॉ० जसविंदर सिंह ने सभी बच्चों को प्रतिभागिता-पत्र देकर सम्मानित किया और आगे बढ़ते रहने के लिए प्रेरित किया। स्वामी विवेकानंद जी ने राष्ट्र निर्माण और युवाओं को एक श्रेष्ठ युवा बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसीलिए साहिल को इनके जीवन के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करने की उत्सुकता हुई। इन्होंने विवेकानंद जी के विचारों और सिद्धांतों महत्व दिया तथा इनके संघर्षों से प्रभावित होकर ही अपने जीवन के संघर्षों का डटकर मुकाबला किया।

23 जनवरी 2024 को करनाल में आयोजित "साइक्लोथोन रैली" में भाग लिया और करण झील का शैक्षणिक भ्रमण किया जिसमें साहिल व अन्यों के साथ प्रो० नीरज सिंह और प्रो० वीरेंद्र सिंह मौजूद रहे। इस शैक्षणिक भ्रमण का उद्देश्य नशा मुक्ति अभियान के तहत समाज और देश से नशे को खत्म करना रहा। इसने युवाओं को नष्ट करने का प्रयास किया है। इसलिए इनको बचाना हमारा नैतिक प्रयास बन जाता है। साहिल और विशाल ने भारत के महान विद्वानों की प्रतिमाओं के साथ तस्वीरें खिंचवाई। यह अनुभव बहुत ही सुन्दर रहा। इस दिन साहिल ने साइक्लोथॉन कार्यक्रम के आनंद के साथ साथ करण झील की सुंदरता, प्रकृति की मनोरम छटा, पक्षियों की चहचाहट और दोस्तों के साथ का गहरा अनुभव प्राप्त किया। यह साहिल के जीवन के प्रमुख अनुभवों में से एक रहा। इस शैक्षणिक भ्रमण से साहिल ने दोस्तों और अध्यापकों का साथ प्राप्त किया।

साहिल यहां तक पहुंचते-पहुंचते बहुत से लोगों के साथ जुड़ा। इस दौरान साहिल कॉलेज में एक लोकप्रिय व्यक्तित्व बन गया। सभी साहिल से और इनके हुनर से वाकिफ़ हो गए थे। यह वह समय था जब साहिल ने सीनियर और साथी कक्षाओं के विद्यार्थियों को दोस्त बनाना शुरू किया जिनमें राज, प्रीति, मधु, बबनजीत, रमन, नवजोत, अमन, राजविंदर, शांतनु, अजय, दिवेन्द्र, जश्न, विष्णु, राहुल, लवप्रीत, दीपेंद्र, गुंत्ताज, साहिल, ध्रुव, मनदीप, सोनी, संदीप, गुलाब, युद्धपाल, सुमित आदि प्रमुख थे। इनके अलावा कुछ परिचित व्यक्ति भी रहे जिनमें शायना, मुस्कान, सर्वजीत, रमनदीप, साहिल, सिमरनजीत, पम्मा, गुरजीत, दिव्या, मनीषा, साक्षी, स्नेहा, जैस्मीन, हसन, रीतू, आलू उर्फ रीतू, खुशप्रीत आदि के साथ 1000 और भी।

19 फरवरी से 25 फरवरी 2024 इस दिन साहिल और प्रो० सुनीता देवी, अजय, मधु, शायना और मुस्कान ने जिला स्तरीय रेडक्रास प्रशिक्षण शिविर में भाग लिया। यह साहिल के जीवन का पहला जिला स्तरीय रेडक्रास प्रशिक्षण शिविर रहा। इस शिविर में प्रतिदिन जाया करता और अगले पांच दिनों तक लगातार गया। इसमें साहिल ने रेडक्रास के संगठन, कार्यों, उद्देश्यों, सिद्धांतों, इतिहास और इसके महान् योगदानकर्ताओं के बारे में जाना तथा यहां पर विभिन्न तरह के प्रशिक्षण इन्होंने लिए जिसमें प्राथमिक चिकित्सा संबंधी प्रशिक्षण, बीमारियों के उपचार के उपाय इत्यादि के बारे में विभिन्न वक्ताओं और प्रशिक्षकों से विस्तृत जानकारी प्राप्त की। यहां पर साहिल ने अपने दोस्तों के साथ मिलकर बहुत काम भी किया और मौज-मस्ती व आनंद भी लिया। यहां पर नए-नए लोगों से मिलने का अवसर मिला जिसमें प्रमुख रूप से डॉ० बीरबल दलाल और स्वास्थ्य विभाग, सड़क सुरक्षा विभाग, शिक्षा विभाग इत्यादि के अधिकारी और विभिन्न महाविद्यालयों से आए विद्यार्थी व अध्यापक उल्लेखनीय हैं।

इसके तुरंत बाद एनएसएस कैंप आ गए और विभिन्न तरह के सेमिनार आयोजित किए गए। **एनएसएस कैंप** 2024 में खूब सीखा, सिखाया, खाया, पिया, जीता और जिताया। ये कैंप बहुत ही यादगार रहे।

15 मार्च 2024 से सात दिवसीय एनएसएस कैंप शुरू किया गया। इसमें दिन की शुरुआत योग से योगाचार्य हरिओम शोकल जी ने करवाई और सारा दिन काम करते, फिर खेलते तथा मनोरंजन भी किया। इस दौरान साहिल को योगाचार्य हरिओम शोकल जी ने योग और एनएसएस कैंप में अच्छा प्रदर्शन करने के लिए प्रधानाचार्य अवतार सिंह, राजेंद्र सिंह, वीरेंद्र सिंह, जसबीर सिंह, कृष्ण कुमार मोदगिल इत्यादि ने सम्मानित किया। सभी को जीवन में सफलता प्राप्त करने हेतु प्रेरित भी किया।
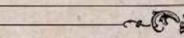
साहिल ने अपने जीवन के दूसरे सप्त दिवसीय एनएसएस शिविर में प्रतिभागिता की। इस शिविर में उसे एनएसएस की स्थापना का इतिहास, कार्यक्रम, उद्देश्य, सिद्धांतों, महत्व और भविष्य निर्माण, योग और स्वास्थ्य, व्यक्तित्व विकास, आत्मनिर्भरता, गायन-वादन की उपयोगिता, सड़क सुरक्षा, साइबर सुरक्षा, समाज सेवा इत्यादि के बारे में जानने का अवसर मिला। यहां पर समाज, धर्म, संस्कृति, शिक्षा और राजनीति के बारे में चर्चा की गई। इनके कारण ही विभिन्न विषयों के संबंध में जानकारी प्राप्त करने के लिए साहिल के मन में तीव्र इच्छा जागृत हो गई।

22 मार्च 2024 के दिन साहिल के जितने भी दोस्त और प्रिय अध्यापक थे, सभी ने होली मनाई तथा खूब मस्ती की । इन खूबसूरत और सुंदर पलों को तस्वीरों में कैद किया। इस दौरान इनके साथ प्रीति, सायना, मुस्कान, बबन, रमन, नवजोत, अजय, साहिल, खुशप्रीत, अमन, डॉ० जसबीर सिंह, प्रो० ज्योति रानी, डॉ० राजेंद्र सिंह, डॉ० वीरेंद्र सिंह और डॉ० जसविंदर सिंह मौजूद थे।

2 अप्रैल 2024 के दिन कॉलेज में एथेलेटिक मिट हुई। अच्छा प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को प्रो० नीरज सिंह और कॉलेज स्टाफ ने सम्मानित किया। इस प्रतियोगिता से साहिल को खेलों का महत्व पता चला। इसके कारण इन्हें बहुत गौरव की अनुभूति हुई। उन्होंने आगे बढ़ते रहने के लिए प्रेरित किया और इस दौरान तस्वीरें भी खिंचवाई।

22 अप्रैल 2024 के दिन फेयरवेल पार्टी का आयोजन किया गया जिसमें दिल से जुड़े हुए और ख़ास दोस्तों को अलविदा किया और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। यह पल बहुत ही सुन्दर, यादगार और सुहावना रहा। इस दौरान सभी को तोहफे दिए गए और साहिल के साथ प्रीति, मधु, अजय, संदीप, राज, दिवेन्द्र, मनदीप, प्रो० नीरज सिंह, नरेंद्र सिंह, प्रो० सुनीता और प्रो० ज्योति रानी तस्वीरों में मौजूद रहे। अभी चौथे सेमेस्टर की परीक्षा आई और तीसरे सेमेस्टर का परिणाम आया जिसमें भी अच्छा प्रदर्शन किया। इसी दौरान कॉलेज में साहिल के पुराने साथी राज के साथ गुलाब, संदीप और भुवन आए और इन्होंने तस्वीरें खिंचवाई।

इसके बाद **29 जून 2024** को तीसरे वर्ष में प्रवेश कर गया और **30 जून 2024** को हवन यज्ञ में सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अब फिर वही प्रकिया अपनाई और विषयों के बाहर जाकर सोचा। इस दिन साहिल को बहुत अच्छा लगा क्योंकि कॉलेज के कार्यवाहक प्राचार्य प्रो० अवतार सिंह ने साहिल के कॉलेज की फीस माफ करने का ऐलान किया। यहां तक पहुंचते-पहुंचते डॉ० जसबीर सिंह, डॉ० राजेंद्र सिंह, डॉ० वीरेन्द्र पाल, डॉ० जसविन्द्र सिंह, प्रो० नीरज सिंह, प्रो० कुणाल वर्मा, नरेंद्र सिंह, प्रो० अवतार सिंह, प्रो० सुनीता देवी, प्रो० ज्योति रानी, प्रो० नेहा बंसल, प्रो० परमजीत कौर, प्रो० सुमन यादव, प्रो० नीलम देवी, प्रो० पूर्णिमा, प्रो० वैशाली, प्रो० बंटीदास और सभी कर्मचारियों के साथ एक परिवार के सदस्य की भांति जान पहचान हो गई।

18 अगस्त 2024 के दिन प्रो० वैशाली और प्रो० पूर्णिमा से मुलाकात हुई और इस दिन इन्होंने रक्षाबंधन के उपलक्ष्य में विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित करवाई जिसमें मटका पेंटिंग, राखी बनाना और मेहंदी लगाना इत्यादि प्रमुख रहीं। इसमें साहिल के साथ अजय, दो शांतनु, विशाल और कॉलेज का स्टाफ मौजूद रहा तथा इन्होंने इन खूबसूरत पलों की तस्वीरें भी खींची। इस दिन साहिल को पहली बार बी. कॉम. विभाग के साथ काम करने का अवसर मिला। इन्होंने विभिन्न तरह के कार्यक्रमों के आयोजन करने के तरीकों के बारे में जाना। इस दिन साहिल के साथ-साथ अन्य दोस्तों को भी सम्मानित किया गया।

12 सितंबर 2024 के दिन लीगल सेल के संचालक प्रो० राजेंद्र सिंह ने मतदान के प्रति जागरूक करने के लिए निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित करवाई और साहिल ने तीसरा स्थान हासिल किया और कक्षा में डॉ० राजेंद्र सिंह और साहिल ने मतदान के प्रति विधार्थियों को बताया। इस दिन साहिल को एक ओर तो इस बात का अवसर मिला कि वह बच्चों को मतदान के प्रति जागरूक करे और दूसरी ओर अपनी मतदान के प्रति जानकारी बढ़ाने का अवसर मिला। इस दौरान इन्होंने जागरूक करते हुए विद्यार्थियों को कहा कि मतदान हमारे देश के लोकतंत्र का निर्माण करता है। इसको निष्पक्ष ढंग से करवाना हमारा कर्तव्य बन जाता है। इसीलिए सभी को मतदान करने का अधिकार मिला है तो उसका प्रयोग भी करना चाहिए।

23 सितंबर 2024 के दिन एनएसएस के स्थापना दिवस के अवसर पर भाषण और काव्य पाठ प्रतियोगिता आयोजित करवाई गई जिसमें साहिल ने दूसरा स्थान हासिल किया और इस दौरान कार्यक्रम अधिकारी प्रो० नीरज सिंह और प्रो० कुणाल वर्मा, प्रो० सुनीता देवी, प्रो० ज्योति रानी, प्रो० रीतू , प्रो० बंटी दास ने सभी विजेताओं को पुरस्कृत किया और उज्जवल भविष्य की कामना की तथा इन खूबसूरत पलों की तस्वीरें भी खींची गई।

इस दौरान साहिल ने अपनी कविता सुनाई। यह इनकी स्वरचित कविता थी। जो इस तरह रही:-

युवाओं की शक्ति को यह मजबूत करें,
बेरंग नीरस जीवन शैली में यह रंग भरे,
सामाजिक अत्याचारों का होता है अंत,
वैचारिक क्रांति का ज्ञान है इसमें अनंत,
देश के विकास के लिए युवाओं को है सोचना,
देश का आधार स्तम्भ है राष्ट्रीय सेवा योजना।
इंसानियत का चारों ओर अलख है जगाना,
सही ग़लत का अंतर लोगों को है बताना,
स्वतंत्रता रूपी परिधान को अब नहीं है खोना,
देश का आधार स्तम्भ है राष्ट्रीय सेवा योजना।
स्वच्छ भारत अभियान चलाकर
एकता का लोगों को पाठ-पढ़ाकर,
शिक्षा की क्रांति से लोगों को उठायेंगे,
ईर्ष्या-द्वेष-छल-कपट को देश से मिटायेंगे,
सत्य के मार्ग पर शांति को है खोजना,
देश का आधार स्तम्भ है राष्ट्रीय सेवा योजना।
अनुशासन, एकता और कर्तव्यों का होता है जब ज्ञान,
परोपकार और दयालुता ही इसकी पहचान,
कहता है "साहिल" मेहनत को दिल में भर जाओ,
कभी याद करेगा जमाना, कुछ ऐसा कर जाओ,
ठान लो युवकों तुम, मंजिल तक है पहुंचना,
देश का आधार स्तम्भ है राष्ट्रीय सेवा योजना।
यह है स्वयंसेवकों का आधार,
वसुधैवकटुंबकम् ही है इसका सार,
इतिहास में नया कीर्तिमान रचाया है,
विश्व को अपना परिवार बनाया है,
अब हमें इसका साथ नहीं है छोड़ना,
देश का आधार स्तम्भ है राष्ट्रीय सेवा योजना।

लेता हूं प्रण मैं, इतिहास में इसका नाम ऊंचा कर जाऊंगा,
ना रूकुंगा, ना थकूंगा और ना झुकूंगा,
आग है सीने में, जज्बा है सांसों में,
उम्मीद है आंखों में, इसे साकार रूप दे जाऊंगा,
हिंदुस्तान की शान को है संजोना,
देश का आधार स्तम्भ है राष्ट्रीय सेवा योजना।

इसके साथ-साथ एनएसएस की गतिविधियों में भाग लेने वाले विद्यार्थी, समाज के लोगों के साथ मिलकर साक्षरता संबंधी कार्य, पर्यावरण संरक्षण, समाज सेवा, स्वास्थ्य एवं सफाई अभियान और प्राकृतिक आपदा के समय पीड़ित लोगों की सहायता करते हैं आदि के बारे में विभिन्न वक्ताओं ने विस्तारपूर्वक जानकारी दी।

25 सितंबर 2024 के दिन कॉलेज में प्रतिभा खोज प्रतियोगिता की तैयारियां चल रही थी और ऐसा विचार आया कि क्यों न खूबसूरत तस्वीरें खिंचवाई जाएं तथा साहिल और राज ने बहुत सी तस्वीरें खींची।

28 सितंबर 2024 के दिन कॉलेज में प्रतिभा खोज प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें साहिल और उसके दोस्तों ने भाग लिया था जिनमें प्रीति, अजय, गुंत्ताज, जश्न, दिव्या, रीतू, राजविंदर, रमन, मनीषा, शांतनु, हसनप्रीत हैं। इस दौरान इन्होंने सभी का खूब मनोरंजन किया। ऐसा आनंदमय पल बहुत ही सुन्दर रहा। इस दिन इनको ऐसा लग रहा था कि ये किसी फिल्म के अंदर काम कर रहे हैं। इसके साथ ही इनके कार्य की कॉलेज के पूरे स्टाफ ने सरहाना की और इनके साथ तस्वीरें भी खिंचवाई।

1 अक्तूबर 2024 के दिन राजनीति विज्ञान परिषद् द्वारा महात्मा गांधी जी की जयंती के उपलक्ष्य में एक संक्षिप्त फिल्म का आयोजन किया गया और इसके साथ साथ डॉ० जसविंदर सिंह ने स्वच्छता अभियान के प्रति जागरूक करने के लिए शपथ दिलवाई। इन गतिविधियों के दौरान तस्वीरें खिंचवाई गई जिनमें साहिल के साथ डॉ० जसबीर सिंह, डॉ० वीरेंद्र पाल, प्रो० नीरज सिंह, डॉ० राजेंद्र सिंह, डॉ० जसविंदर सिंह, प्रो० कुणाल वर्मा, प्रो० बंटी दास आदि मौजूद रहे।

11 अक्तूबर 2024 के दिन एनएसएस इकाई के द्वारा एक दिवसीय एनएसएस कैंप लगाया गया और इसमें सड़क सुरक्षा से संबंधित जानकारी देने के लिए पुलिसकर्मी राज कुमार और उनके सहयोगी आए तथा साहिल ने पोस्टर, फिल्म और क्विज प्रतियोगिता करवाई। इस दिन एनएसएस का शिविर लगा। जिसमें साहिल ने विद्यार्थियों को सड़क सुरक्षा से संबंधित जानकारी प्रदान की। वहीं इनकी जानकारी में बढ़ोतरी ट्रैफिक पुलिस ने उच्च स्तर पर की और उन्होंने कहा कि हमें आजकल के वातावरण को देखते हुए सड़क सुरक्षा के नियमों का पालन करना चाहिए ताकि किसी भी तरह की दुर्घटना न हो। वहीं जानकारी में बढ़ोतरी करते हुए इनको बताया कि समाज को सही रास्ते पर कोई लाभ सकता है वो देश का युवा है। इसीलिए साहिल ने अपने जीवन में सड़क सुरक्षा के नियमों की पालना करने का निर्णय किया। इस दौरान बड़ी संख्या में स्वयंसेवकों और स्वयंसेविकाओं ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया और खूब आनंद लिया। इन खूबसूरत पलों की तस्वीरों में प्रधानाचार्य प्रो० अवतार सिंह, प्रो० नीरज सिंह, डॉ० वीरेंद्र पाल और सभी विद्यार्थी मौजूद हैं।

14 अक्तूबर 2024 के दिन दयानंद महिला महाविद्यालय, कुरूक्षेत्र के इतिहास, राजनीति विज्ञान और लाइब्रेरी सोसायटी के द्वारा महात्मा गांधी जी की जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित निबंध लेखन प्रतियोगिता का परिणाम आया जिसमें साहिल ने पहला स्थान प्राप्त किया और इसकी जानकारी डॉ० राजेंद्र सिंह ने देते हुए बधाई दी तथा जीवन में और अधिक सफलता प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। इस दिन साहिल ने ईको क्लब द्वारा आयोजित पर्यावरण संरक्षण पर आयोजित जागरूकता कार्यक्रम में भाग लिया। इन्होंने इस विषय पर गंभीरता से जानकारी प्राप्त की। इन्होंने जानकारी लेते हुए देखा कि किस तरह देश में पर्यावरण की गंभीर समस्या है और इसका निवारण प्रकृति को बढ़ावा देने से ही होगा। यही से साहिल को पता चला कि पर्यावरण को बचाने रखना हमारा नैतिक कर्तव्य बनता है। तब से इन्होंने जितने भी पौधे लगाए उसकी बचाव व्यवस्था और रखवाली की।

15 अक्तूबर 2024 के दिन नशा मुक्त परिसर सेल के संचालक डॉ० जसविंदर सिंह ने पोस्टर और स्लोगन लेखन प्रदर्शनी लगाई तथाइन्होंनेतस्वीरें भी खींची जिसमें डॉ० राजेंद्र गोयल, डॉ० राजेंद्र सिंह, डॉ० जसबीर सिंह, प्रो० सुनीता देवी, डॉ० सुमन यादव और सभी प्रतिभागी मौजूद रहे। इसके साथ साथ सभी ने जीत के लिए बधाई दी और सभी अध्यापकों ने सम्मानित किया।

16 अक्तूबर 2024 के दिन साहिल ने और डॉ० राजेंद्र सिंह ने कक्षा में यूरोप के मानचित्र की जानकारी दी।

21 अक्तूबर 2024 इस दिन साहिल और राज ने हॉस्टल में शहर और कॉलेज के साथ तस्वीरें खींची जिनमें पूरी प्रकृति बहुत ही सुन्दर लग रही थी।

23 अक्तूबर 2024 के दिन साहिल ने और उसके दोस्तों ने पहले अपने कॉलेज में और फिर राधाकृष्णन सनातन धर्म कॉलेज, कैथल में आयोजित जोनल यूथ फेस्टिवल में नाटक मंचित किया जिसको दर्शकों ने खूब सराहा। इस नाटक में साहिल, अजय, साक्षी, दिव्या, रीतू और रमन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस अवसर पर इन्होंने बहुत सी फोटो खींची। इस दौरान इनके साथ प्रो० कुणाल वर्मा , प्रीति, प्रो० वैशाली, प्रो० पूर्णिमा, प्रो० चांदकिरण , गुंत्ताज, नवजोत, अमन, राजविंदर, अंकित साथ रहे।

26 अक्तूबर 2024 के दौरान थोड़ा तस्वीरें और वीडियो बनाने का चाव बढ़ा तथा साहिल के सभी दोस्त एक दूसरे के साथ कभी गप्पे मारते और अभी कक्षाएं लगवाते गए, लेकिन बीच में थोड़ा माहौल खराब हुआ, फिर भी वैसे ही ये खुश रहे। इनके बावजूद और ज्यादा खुश रहने लगे।

31 अक्टूबर 2024 के दिन साहिल ने शारीरिक एवं खेल विभाग द्वारा आयोजित एयर राइफल और पिस्टल चलाने का प्रशिक्षण लिया। इस शिविर से इनको पता चला कि किस तरह इस खेल के द्वारा खिलाड़ी अपने देश और समाज का नाम रोशन कर रहे हैं। इस दौरान पहली बार प्रो० नीलम के साथ मुलाकात हुई। इनके मार्गदर्शन में ही साहिल ने राइफल प्रशिक्षण का लाभ प्राप्त किया। इस दौरान इनको "निशानेबाजी" नामक खेल में प्रतिभागिता करने की अहमियत का पता चला।

कॉलेज चीका में दो दिवसीय राइफल शूटिंग शिविर में भाग लेते विद्यार्थी।

5-6 नवंबर 2024 के दिन कॉलेज में साहिल, राहुल और राज ने अपने खूबसूरत पलों की तस्वीरें और वीडियो बनाई।

11 नवंबर से **15 नवंबर 2024** तक जिला रेडक्रास सोसायटी,कैथल के द्वारा 'युवा प्रशिक्षण शिविर' का आयोजन किया गया जिसमें साहिल प्रो० कुणाल, प्रो० जसबीर कौर, राज, गुंत्ताज सिंह, हसनप्रीत कौर और रीतू ने भाग लिया। इसमें बहुत सी महान् हस्तियों ने शिरकत की और इनको प्रशिक्षण दिया। यहां पर साहिल को'सर्वश्रेष्ठ स्वयंसेवक' का सम्मान प्राप्त हुआ। इस दिन साहिल ने दूसरी बार जिला स्तरीय रेडक्रास के प्रशिक्षण शिविर में हिस्सा लिया। इस पांच दिवसीय शिविर में रेडक्रास का इतिहास, कार्यक्रमों, उद्देश्यों और महत्व इत्यादि का पता लगा। यहां पर बहुत अच्छी अच्छी गतिविधियों में भाग लिया और उसमें बखूबी अपना प्रदर्शन किया। नये-नये कॉलेजों के विद्यार्थियों के विचारों से अवगत होने का अवसर मिला। विभिन्न तरह के वक्ताओं से बातचीत की। यहां पर साहिल ने अपनी तकनीकी जानकारी और लेखनी का भी परिचय दिया जिसके फलस्वरूप ही इन्होंने एक श्रेष्ठ युवा का सम्मान प्राप्त किया। यह इनके जीवन की अनूठी उपलब्धि रही।

19 नवंबर 2024 को डीएवी कॉलेज, चीका में पूरी रेडक्रास टीम को सम्मानित किया गया। इस दिन साहिल को एनएसएस कैंप में परिवार के महत्व की प्रासंगिकता का पता चला। इस शिविर में मुख्य वक्ता के रूप में पधारे प्रेम सिंह पूनिया जी ने परिवार के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मानव जीवन में परिवार की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका है क्योंकि परिवार व्यक्ति के जीवन की पहली पाठशाला होता है। उसके पास संस्कार और विचार परिवार से ही आते हैं। इस शिविर में साहिल ने परिवार और इसके मायनों को समझा। इस अवसर पर अध्यापकों और विद्यार्थियों ने भी अपने परिवार से संबंधित विचार साझा किए। इस दौरान कार्यवाहक प्राचार्य प्रो० अवतार सिंह, डॉ० जसबीर सिंह, डॉ० वीरेंद्र पाल, डॉ० नीरज सिंह, प्रो० कुणाल, सुशील गोयल जी, नरेंद्र जी, डॉ० जसविंदर सिंह, डॉ० राजेन्द्र सिंह, डॉ० सुमन यादव आदि मौजूद रहे।

23 नवंबर 2024 को राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा एक दिवसीय एनएसएस शिविर आयोजित किया गया, जिसमें काम करने के साथ बहुत मौज-मस्ती भी की। इस दिन साहिल को एनएसएस कैंप में परिवार के महत्व की प्रासंगिकता का पता चला। इस शिविर में मुख्य वक्ता के रूप में पधारे प्रेम सिंह पूनिया जी ने परिवार के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मानव जीवन में परिवार की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका है क्योंकि परिवार व्यक्ति के जीवन की पहली पाठशाला होता है।

उसके पास संस्कार और विचार परिवार से ही आते हैं। इस शिविर में साहिल ने परिवार और इसके मायनों को समझा। इस अवसर पर अध्यापकों और विद्यार्थियों ने भी अपने परिवार से संबंधित विचार साझा किए।

26 नवंबर 2024 के दिन साहिल और अन्य छात्रों को राममेहर काजल जी ने प्राथमिक चिकित्सा और नशा मुक्ति अभियान की जानकारी दी। इस ज्ञान को साहिल ने अपने जीवन के लिए आवश्यक बताया। इनके साथ साहिल ने तस्वीरें भी खिंचवाई। इन्होंने साहिल के उज्जवल भविष्य की कामना की और आगे बढ़ते रहने के लिए प्रेरित किया।

2 दिसंबर से 16 दिसंबर तक 5वें सेमेस्टर की परीक्षाएं चली।

20 दिसंबर 2024 इस दिन साहिल ने नशा मुक्ति प्रांगण प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित नशा मुक्ति रैली में भाग लिया। इस अवसर पर साहिल को रैली का नेतृत्व करने का अवसर मिला। उसने रैली की कमान बखूबी संभाली और लोगों को अपने नारों द्वारा प्रफुल्लित किया तथा कहा कि हम सबको एक होना होगा तभी नशे को जड़ से खत्म किया जा सकता है। यहां साहिल को पता चला कि यह अभियान सरकार द्वारा चलाया गया अभियान है जिसको हम युवाओं के प्रयासों द्वारा ही सफल किया जा सकता है। इस दौरान साहिल के साथ प्रो० अवतार सिंह, डॉ० जसविंदर सिंह, प्रो० कुणाल, प्रो० सुनीता, प्रो० नीलम, प्रो० राजपाल कौर इत्यादि थे।

1 जनवरी 2025 को डीएवी कॉलेज, चीका में नववर्ष मनाया गया। साहिल नववर्ष के पहले दिन एक नई उर्जा, नई सोच और नई उमंग के साथ कॉलेज में गया। यहां पर इन्होंने अपने प्यारे साथियों और अध्यापकों को नववर्ष पर स्वास्थ्य और समृद्धि की शुभकामनाएं दीं। इस दौरान उसने पढ़ाई भी की और वह खुश भी हुआ। इन सबके कारण वह दिन साहिल के लिए बहुत लाभदायक रहा।

13 जनवरी 2025 को लोहड़ी पर्व मनाया गया जिसमें कॉलेज के सभी सदस्य शामिल हुए।

29 जनवरी 2025 को रेड रिबन क्लब द्वारा शिविल अस्पताल, कैथल में " एक दिवसीय वर्कशॉप " आयोजित की गई जिसमें साहिल, प्रो० बंटीदास , प्रीति, शांतनु, अजय, राज ने भाग लिया।

15 फरवरी से 21 फरवरी 2025 तक एनएसएस इकाई द्वारा गांव बलबेहड़ा में सात दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। इसमें साहिल ने बहुत कुछ सीखा और विभिन्न तरह की गतिविधियां की। इसमें अच्छा प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को प्रो० नीरज सिंह और डॉ० रणधीर सिंह ने सम्मानित किया गया। इस शिविर में साहिल ने पहले तो अपने समय का प्रबंधन किया, प्रतिदिन वह समय पर पहुंचकर प्रो० नीरज सिंह, राज और सिमरनजीत सिंह के साथ मिलकर साफ़ सफाई करता था। फिर माता सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्जवलित करना और चौथा सभी को खाना खिलाया जो राहगीर आ जाते थे। यहीं नहीं विशेषज्ञों और ग्रामीणों के साथ बातचीत करना भी साहिल ने बखूबी ढंग से संपन्न किया। इस दौरान इन्होंने अलग-अलग विचारों वाले लोगों से जानकारी प्राप्त की। इन सभी से साहिल बहुत प्रभावित हुआ। इसी प्रवृत्ति के कारण ही साहिल को विशेष सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हुआ। जो जीवन की महान उपलब्धियों में से एक रहा। यहां पर साहिल की काम भावना, प्रेम भाव और विचार भावना तथा लोगों के प्रति सेवा भावना देखने को मिली।

25 फरवरी 2025 को डीएवी कॉलेज, चीका में खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें अच्छा प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।

01 मार्च 2025 इस दिन साहिल ने कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया और महिला एवं बाल विकास के कानूनों के प्रति अपनी जानकारी को और अधिक बढ़ाया। इस कार्यक्रम में विभिन्न तरह के सरकार द्वारा बनाए गए नवीन कानूनों की विस्तृत जानकारी प्राप्त की। इस कार्यक्रम के कारण साहिल का नवीनतम कानूनों के प्रति सम्मान बढ़ा। इस जागरूकता कार्यक्रम ने साहिल के विचारों में सकारात्मकता लाने का प्रयास किया।

08 मार्च 2025 को डीएवी कॉलेज, चीका में महिला दिवस के उपलक्ष में एनएसएस इकाईयों द्वारा "एक दिवसीय शिविर" का आयोजन किया गया। इसमें विद्यार्थियों को शिविर में भाग लेने के लिए प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया। इस दौरान साहिल को एनएसएस और एनसीसी कैडेट्स के रूप में काम करने का अवसर मिला क्योंकि इस कार्यक्रम में एनएसएस के साथ साथ एनसीसी कैडेट्स भी शामिल हुए । साहिल को ऐसे लगने लगा कि जब दोनों यूनिट एक साथ मिल जाती हैं तो कितनी ताकत बढ़ जाती है। इस दिन एनएसएस इकाई द्वारा महिला दिवस मनाया गया जिसमें मुख्य अतिथि और वक्ता पहुंचे। इस दौरान साहिल ने यह कविता तैयार की थी:-

तू खुद की खोज में निकल,
तू किस लिए हताश हैं,
तू चल तेरे वजूद की समय को भी तलाश है.......(2)
जो तुमसे लिपटी बेड़ियां,
ना समझ इनको वस्त्र तूं,
इन बेड़ियों को निकालकर,
इन्हें बना ले अपना अस्त्र तूं।
तू खुद की खोज में निकल.......(2)
चरित्र जब पवित्र है,
तों क्यों है ऐसी दशा तेरी,
ये पापियों को हक़ नहीं, कि लें परीक्षा तेरी।
तू खुद की खोज में निकल.......(2)
जलाकर भस्म कर उसे,
जो क्रूरता का जाल है,
तू आरती की लौ नहीं,
तू क्रोध की मसाल है।
तू खुद की खोज में निकल.......(2)
चुनर उड़ाकर ध्वज बना,
गगन भी कंप-कपायेगा,
अगर तेरी चुनर गिरी,
तो एक भूकंप आयेगा।
तू खुद की खोज में निकल.......(2)

09 मार्च से 15 मार्च 2025 के दौरान साहिल के जीवन का पहला और यह यह महत्वपूर्ण विश्वविद्यालय स्तरीय सात दिवसीय एनएसएस शिविर रहा। जहां उसने अपने विचारों, व्यवहारों और सामाजिक कार्यक्रमों में ज्ञान प्राप्त करने कुछ भावना को और ज्यादा बढ़ाया। यहां पर साहिल को विभिन्न व्यक्तियों से भेंट करने का अवसर मिला जो अपने अपने कार्य क्षेत्र में निपुण थे। जिनमें पुलिस विभाग, पर्यावरण विभाग, स्वास्थ्य विभाग, कृषि विभाग और तकनीकी विभाग आदि प्रमुख रहे हैं। इनसे प्राप्त की जानकारी से साहिल ने एक विस्तृत रिपोर्ट लिखी। यही नहीं यहां पर अपनी कविता को भी सुनाया और घर से दूर रह कर जीवन जीना सीखा। इनसे प्रेरणा पाकर ही साहिल के अंदर जो आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास की भावना थी वह और अधिक ज्यादा दृढ़ हो गई।

01 अप्रैल 2025 को में हिंदी प्राध्यापक डॉ० जसबीर सिंह की कार्यवाहक प्राचार्य के पद पर नियुक्ति के उपलक्ष में "हवन-यज्ञ" करवाया गया । सभी ने उनके इस अवसर पर शुभकामनाएं दी। इस दौरान कॉलेज के सभी अधिकारी और कर्मचारी मौजूद रहे। इस दौरान साहिल का अपने गुरुजी डॉ० जसबीर सिंह के प्रति अत्यधिक प्रेम दिखाई दिया। इस दिन प्राचार्य पद पर आसीन होने के अवसर पर साहिल ने उनको बधाई दी। वहीं यह सब देखकर इनके गुरुजी हर्ष से विह्वल हो उठे। उन्होंने भी साहिल के लिए आभार जताया और भविष्य में आगे बढ़ते रहने के लिए प्रोत्साहित किया और आशीर्वाद दिया। ये आज भी अपने गुरुजी के बताए हुए मार्ग पर चल रहे हैं।

11 अप्रैल 2025 को एनएसएस इकाई और राजनीति विज्ञान परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में महात्मा ज्योतिबा फुले और डॉ० भीमराव अम्बेडकर जी की जयंती के उपलक्ष में "भाषण प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया जिसमें सभी विद्यार्थियों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया तथा विजेता विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। इस प्रतियोगिता में साहिल को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ और इस उपलब्धि पर डॉ० जसबीर सिंह, डॉ० वीरेंद्र पाल, प्रो० नीरज सिंह, प्रो० कुणाल और प्रो० ज्योति रानी ने सम्मानित किया। इस दौरान साहिल के साथी प्रीति, राज, दिव्या, अजय आदि उपस्थित रहे और महात्मा ज्योतिबा फुले जी के जीवन पर विस्तार सहित प्रकाश डाला। यह प्रतियोगिता इसलिए भी महत्वपूर्ण रही क्योंकि इसमें साहिल ने पहली बार बिना किसी हिचकिचाहट और डर के अपने विचार व्यक्त किये। पहले तो इनको बहुत घबराहट होती थी क्योंकि शब्दों की कमी रहती थी, लेकिन अबकी बार ऐसा कुछ नहीं हुआ। यह सब डॉ० जसबीर सिंह, डॉ० राजेन्द्र सिंह, डॉ० नीरज सिंह और प्रो० ज्योति रानी के साथ का ही परिणाम रहा क्योंकि इन्होंने साहिल को साहित्य को निरंतर पढ़ते रहने और मंच पर बोलने के लिए प्रोत्साहित किया। इस तरह साहिल एनएसएस, एनडीएलआई और बी. कॉम के कार्यक्रमों में भी मंच पर बोला।

12 अप्रैल 2025 को डीएवी कॉलेज, चीका के पुस्तकालय विभाग द्वारा नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ इंडिया के संयुक्त तत्वावधान में "डिजिटल लाइब्रेरी" विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया जिसमें मुख्य वक्ता डॉ० सुमन यादव रहीं। यहां पर साहिल को भी अपनी डिजिटल लाइब्रेरी के प्रति जानकारी साझा करने का अवसर मिला। इस अवसर पर कॉलेज के पुस्तकालय विभाग से जुड़े सदस्य शामिल हुए। यहां पर मंच पर बोलने का एक ओर प्रयोग सफल साबित हो गया। यहां पर साहिल ने डॉ० सुमन यादव के साथ मिलकर काम किया और बच्चों को जागरूक किया। यहां पर साहिल का तकनीकी प्रयोग भी सफल हो गया। यहां तक पहुंचते पहुंचते साहिल पोस्टर बनाने, सर्टिफिकेट बनाना और फोटो व वीडियो संपादन करना भी अच्छे से सीख गया था।

18 अप्रैल 2025 को डीएवी कॉलेज, चीका के प्राचार्य डॉ० जसबीर सिंह को "प्राचार्य पद" की शुभकामनाएं देने के लिए उनके शिष्य डॉ० सुनील कुमार और हरमन सिंह ने शिरकत की। इस अवसर पर सभी ने सामूहिक तस्वीर खिंचवाई। यहां पर साहिल को इस बात का पता चला कि जो व्यक्ति डीएवी कॉलेज, चीका की उपज हैं। उनके मन में अपने अध्यापकों के प्रति आज भी उतना ही मान और सम्मान है क्योंकि साहिल ने देखा कि उसके अध्यापक डॉ० सुनील कुमार और प्रो० हरमन सिंह जो विद्यार्थी रह चुके हैं वो अपने गुरु डॉ० जसबीर सिंह को प्राचार्य पद पर आसीन होने की बधाई देने के लिए पहुंचे। यहां पर साहिल को बहुत खुशी हुई कि आज भी अपने अध्यापकों के प्रति सम्मान की भावना मौजूद है। इनका जो सम्मान अपने अध्यापकों और दोस्तों के प्रति था, वह और अधिक बढ़ गया।

21 अप्रैल 2025 को डीएवी कॉलेज, चीका में बी. ए. द्वितीय वर्ष की छात्राओं द्वारा बी.ए. तृतीय वर्ष के छात्र-छात्राओं के लिए आयोजित किये जा रहे "विदाई समारोह" का निमंत्रण पत्र संपूर्ण कॉलेज के अधिकारियों और विशेष विद्यार्थियों को दिया गया। यह बहुत ही खूबसूरत और पूरी मेहनत से बनाया गया जिसमें अनु, तनु और पायल का योगदान बहुत ज्यादा रहा। इस अवसर पर साहिल ने भी उनकी सहायता की। इन्होंने विदाई निमंत्रण पत्र में साहिल को विशेष स्थान दिया। साहिल ने भी इनके लिए बड़े खूबसूरत आशीर्वादात्मक शब्द लिखे। इस दिन साहिल को पहली खुशी इस बात की हुई कि उसको द्वितीय वर्ष की छात्राओं ने अपना मार्गदर्शक समझा और दूसरी खुशी इस बात की हुई थी कि उसको विदाई समारोह का सम्मानजनक आमंत्रण प्राप्त हुआ। यहां पर साहिल के प्रति इन छात्राओं का सम्मान और स्नेह दिखाई दिया। इनका कहना था कि जब से ये मिलें तब से इन्होंने जितना उनका हर कार्य और परिस्थिति में साथ दिया है शायद ही किसी ने दिया हो। यह साहिल के लिए बहुत सम्मानजनक बात रही।

23 अप्रैल 2025 को "विदाई समारोह" का आयोजन किया गया। इस दौरान बहुत ही खुशी मिली । इस दौरान कार्यक्रम की शुरुआत डॉ० जसबीर सिंह और अन्य कॉलेज के सम्मान योग्य अधिकारियों द्वारा माता सरस्वती की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करके और दीप प्रज्जवलन के साथ की गई। इन्होंने बहुत ही प्रभावशाली और प्रेरणादायक वचनों से सभी का मार्गदर्शन किया। इस कार्यक्रम में संगीत और मस्ती का समन्वय रहा। इस दौरान साहिल ने सुबह से लेकर हर कार्य में मदद की। इनकी देखरेख में सभी कार्यों को पूरा किया गया चाहे वह कार्य वित्तीय हो या वितरण संबंधी हो। हर कार्य को बखूबी सफल किया। इन कार्यों की वजह से साहिल को बहुत सम्मान मिला और सभी ने सराहना की। इससे साहिल को बहुत खुशी हुई। यही नहीं इस कार्यक्रम में इन्होंने अपने प्रिय अध्यापकों डॉ० जसबीर सिंह व डॉ० नीरज सिंह तथा दोस्तों अनु, तनु और पायल का भी सम्मान किया। साहिल की यह सद्भावना व स्नेह को देखते हुए इन्होंने बहुत आशीर्वाद और उज्जवल भविष्य की कामना करने वाले शब्द कहे। यह सब साहिल की प्रतिभा और मेहनत का ही परिणाम था।

यह समागम बड़ा ही खूबसूरत और आकर्षक रहा। यहां पर सभी को सम्मानित भी किया गया। इस दौरान साहिल ने अपने खूबसूरत सफ़र पर जो कविता तैयार की थी वह सभी को सुनाई जो इस तरह रही:-

क्या पता था किसी दिन इस कॉलेज की ईंट इमारत से,
इस क़दर मोहब्बत हो जाएगी,
और जो आज परिस्थितियों की हकीक़त है
किसी दिन की यादों की सबसे खूबसूरत तस्वीर बना जाएगी,
यहां दोस्ती की दो महफ़िल सजी चुकी है,
एक तो यहीं पर छूट जाएगी और
एक हमारे साथ जिंदगी के सफ़र पर चली जाएगी।
आज वक्त को रोकने का जी चाहता है,
न जाने क्यों छूट जाने से डर लगता है,
बच्चे बनकर आए थे हम सब,
एक-दूसरे से कितने पराये थे हम सब।
कॉलेज में आकर ही हम सब एक हो गए,
हंसने खेलने के बहाने अनेक हो गए,
इस सफ़र की शुरुआत हुई थी तीन साल पहले,
क्लास इंट्रो से जो शुरू हुई थी।
जैसे तैसे करके हमने निकाला था पहला साल,
बहुत खुश हुए अब बचे हैं सिर्फ दो साल,
पहले सेमेस्टर ने हमारी असलियत दिखाई,
एक-दूसरे से बोले अब कुछ नहीं है बस में भाई।
सोचते थे कि कब यहां से जाएंगे,
अब यह भी पता नहीं कि आगे का समां पायेंगे या नहीं पायेंगे।
याद आयेगा हम सबको कॉलेज का यह दौर,
सुबह सुबह कॉलेज में आना,
वो नीरज सर का पहला लेक्चर लेना,
लेट होने पर दौड़ लगाना,
अटेंडेंस के लिए उनको मस्का लगाना,
राजेन्द्र सर का एक एक क्लास का हिसाब रखना,
वो जसबीर सर के साहित्यिक अनुभव और ज्ञान,
वो जसविंदर सर की मीठी मीठी बातें,
वो वीरेंद्र सर का लोकप्रिय डांस स्टेप,

यह सब बहुत याद आयेगा हमें,
ना चाहते हुए भी इस भीड़ का हिस्सा हो गए,
ना जाने कब हम कॉलेज का एक किस्सा हो गए,
जिन बातों का दुःख था आज उन्हीं से खुशी मिलती है,
न जाने दोस्तों क्यों दिल में कुछ और आता है।
आज वक्त को रोकने का जी चाहता है।
वो ज्योति मैम, सुनीता मैम और नेहा मैम का प्यार, स्नेह व वात्सल्य
वो कुणाल सर की मुस्कुराहट जिसके कायल थे हम सब,
वो अंकलों के साथ सुबह शाम बातें करना,
और वो मेरे प्राण तत्वों दोस्तों के साथ मौज-मस्ती करना,
अब यह सब हमें कहां मिलेगा।
'साहिल' ने कुछ लिखा है और कुछ दिल में अब भी बाकी है,
शायद कुछ पल का साथ अब भी बाकी है,
डिग्री तक पहुंचकर भी कुछ छूट सा रहा है,
क्योंकि जा रहा है जो वक्त,
वो दोबारा आने से रहा,
इसलिए वक्त को रोकने का जी चाहता है।

इस दौरान साहिल के प्यारे साथी पूजा और खुशी ने इन्हें और प्रीति को सम्मानित किया। यह सम्मान बड़ा ही खूबसूरत और यादगार रहा। साहिल और राज ने इनके प्यारे और मार्गदर्शक डॉ० नीरज सिंह को स्मृति चिह्न भेंट किया। वे इस स्मृति चिह्न की प्राप्ति से फूले नहीं समाए। उन्होंने साहिल के वर्तमान और भविष्य के लिए शुभकामनाएं और आशीर्वाद दिया। दूसरी ओर साहिल ने प्यारे साथियों, अध्यापकों और अंकलों के साथ इन खूबसूरत पलों की तस्वीरें खिंचवाई। वहीं कार्यक्रम का संचालन करने वाली होनहार और मेहनती अनु, तनु और पायल को सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में सभी स्टाफ सदस्य और विशिष्ट अधिकारियों ने शिरकत की।

24 अप्रैल 2025 को कॉलेज में बी.कॉम और एम.कॉम के विद्यार्थियों ने "विदाई समारोह" का आयोजन किया जिसमें साहिल को मंच संचालन करने का गौरव प्राप्त हुआ। इन्होंने अपनी इस भूमिका का अच्छी तरह निर्वहन किया। इसमें डॉ० जसबीर सिंह, डॉ० राजेन्द्र सिंह, डॉ० वीरेंद्र सिंह, डॉ० राजेन्द्र गोयल, डॉ० जसविंदर सिंह, प्रो० सीमा, प्रो० वैशाली, प्रो० पूर्णिमा, प्रो० प्रीति, प्रो० रेनू शर्मा, नीरज सिंह और नरेश कुमार ने शिरकत की। इन पलों की खूबसूरत तस्वीरें खिंचवाई और इस अवसर पर इनके साथ शांतनु, हैप्पी और विशाल मौजूद रहे। इस दिन साहिल को बी०कॉम के विद्यार्थियों ने विदाई समारोह में आमंत्रित किया। इससे साहिल को बहुत खुशी हुई कि वह आज मुख्य अतिथि के रूप में कहीं पहुंच सकता है। यहां पर साहिल कहता है कि उन्होंने बहुत अच्छे ढंग से मंच का संचालन किया और उसकी गरिमा को बनाए रखा। यहां पर साहिल का अद्वितीय अनुभव रहा। नये विद्यार्थियों से बातचीत और परिचय किया। इन्होंने यहां पर बहुत मौज-मस्ती की और इन खूबसूरत पलों की तस्वीरें भी खींची। यहां पर साहिल की कला और प्रतिभा की मेहनत दिखाई दी। कॉलेज के जीवन में लाखों में एक ऐसा विद्यार्थी होगा जिसको ऐसा सम्मान प्राप्त हुआ। यह कॉलेज के इतिहास में पहली बार घटना घटित हुई कि बी०ए कक्षा के विद्यार्थी को ऐसा अवसर प्राप्त हुआ।

25 अप्रैल 2025 को साहिल, राज और सिमरनजीत ने हमारे प्यारे, कर्तव्यनिष्ठ और परिश्रमी अंकलों को सम्मानित किया। जिनके नाम इस प्रकार हैं- श्री गजे सिंह, श्री नायब सिंह, श्री संजय कुमार, श्री विनोद कुमार, श्री चांदी राम, श्री संदीप कुमार, श्री कली राम, श्री जगसीर सिंह, श्री राजेश कुमार और श्री राजेन्द्र सिंह। इन्होंने बहुत प्यार और सम्मान दिया। यहां पर साहिल की अपने बड़ों के प्रति सम्मान और स्नेह की भावना देखने को मिली। यहां साहिल के लिए ऐसा इसलिए कहा गया क्योंकि उसके साथ यह तक पहुंचते-पहुंचते कॉलेज के अध्यापकों और दोस्तों के साथ-साथ प्यारे, ईमानदार, वफादार और परिश्रमी अंकल भी जुड़ गए थे। इन्होंने साहिल को बहुत प्यार और सम्मान दिया। तो साहिल का भी कर्तव्य बनता था कि इनका सम्मान किया जाए और उसने इस कर्तव्य को बहुत खुशी के साथ पूरा किया। भले ही ये सम्मान चिह्न विदाई समारोह के पैसों से आए थे लेकिन साहिल को अपने हाथों से अंकलों को सम्मानित करने का सौभाग्य तो प्राप्त हुआ। इसी से उसको बहुत खुशी हुई। इसके कारण सभी अंकलों ने साहिल के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए बहुत आशीर्वाद दिए।

26 अप्रैल 2025 को डीएवी कॉलेज, चीका में राजनीति विज्ञान परिषद् और एनएसएस इकाई के संयुक्त तत्वावधान में "सड़क सुरक्षा जागरूकता" विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया जिसमें ड्राइविंग ट्रेनिंग सेंटर, गढ़ी के अधिकारियों ने शिरकत की। इसमें साहिल ने प्रो० नीरज सिंह की इच्छा से सड़क सुरक्षा विषय पर संक्षिप्त फिल्म दिखाई। इस दिन साहिल कॉलेज में नहीं जाना चाहता था क्योंकि उसकी परीक्षाएं नजदीक आ गई थी। लेकिन प्रो० नीरज सिंह के आग्रह पर वह उस कार्यक्रम में पहुंच गया। संयोगवश वहां पर सेमिनार हॉल का प्रोजेक्टर सड़क सुरक्षा अधिकारियों के लैपटॉप से कनेक्ट नहीं हुआ। फिर साहिल ने अपनी सूझबूझ से उनकी जो भी समस्या का समाधान किया जिससे वो सभी बहुत खुश हुए। इस तरह साहिल के द्वारा तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने का प्रयास इस दिन सफल सिद्ध हुआ। यही नहीं साहिल ने अपनी तकनीक द्वारा सड़क सुरक्षा से संबंधित जानकारी वीडियो के माध्यम से प्रदान की।

01 मई से **22 मई 2025** तक छठे सेमेस्टर की परीक्षाएं चली। इस दौरान साहिल की छठे सेमेस्टर की परीक्षाएं चली। अब इन्होंने परीक्षा की तैयारी बड़ी निष्ठा और ईमानदारी से की और एक ओर परीक्षाएं दी और दूसरी ओर कॉलेज में भी जाता रहा। इस तरह परीक्षाएं खत्म हो गई। अब उसने समय का सदुपयोग करने के लिए आगामी स्नातकोत्तर (हिंदी) उपाधि के पाठ्यक्रम की तैयारी की। इसके अलावा उसने यह भी सोचा कि कहां पर दाखिला लिया जाए और वहां पर किस तरह पढ़ाई करनी है? यहां पर साहिल विद्यार्थियों को यह संदेश देता है कि यदि आप अपने काम की नियमावली और संरचना पहले ही बनाना शुरू कर देते हैं तो बाद में आपको कभी भी कठिनाई नहीं होगी। इस तरह साहिल ने समय प्रबंधन किया।

भारत के स्वर्णिम इतिहास में गुरु-शिष्य और मित्र परम्परा के लिए अपना सर्वस्व दाव पर लगा देने वाले बहुत सारे गुरु व शिष्य और मित्र रहे हैं। भारतीय संस्कृति में गुरु-शिष्य-मित्र की महान परम्परा के अन्तर्गत गुरु (शिक्षक) अपने शिष्य को शिक्षा देता है । यही क्रम लगातार चलता रहता है। गुरु-शिष्य-मित्र की यह परम्परा ज्ञान के किसी भी क्षेत्र में हो सकती है। आज के आधुनिक समय में साहिल के जीवन पर नजर डाले, तो यह स्पष्ट नजर आता है कि उसको सफलता की बुलंदियों पर पहुचाने में उसके शिक्षक अथवा मित्र का अनमोल योगदान रहा है। जीवन में एक अच्छा शिक्षक और मित्र अपने हर शिष्य अथवा दोस्तों को सर्वश्रेष्ठ ज्ञान उपलब्ध करवाने का प्रयास करता है, जिससे कि उसके शिष्य अथवा दोस्त का भविष्य उज्जवल हो और वो सफलता के नित नये आयाम स्थापित करके जीवन को सही मार्ग पर ले जा सके। किसी भी छात्र अथवा मित्र के जीवन को सफल बनाने में शिक्षक और दोस्त बहुत ही अहम किरदार निभाता है। शिक्षक और मित्र अपने छात्र या दोस्त को अच्छी शिक्षा और साथ देकर उसे समाज का अच्छा नागरिक बनाता है। माता पिता के बाद शिक्षक और मित्र की वजह से ही किसी भी मित्र या छात्र का भविष्य उज्वल होता है। किसी भी व्यक्ति के जीवन में माता-पिता के बाद में केवल शिक्षक और मित्र की ही सबसे अहम महत्वपूर्ण भूमिका होती है। माता-पिता के दिये गये ज्ञान के बाद बच्चों को शिक्षा प्रदान करने में सबसे अहम भूमिका उनका शिक्षक और मित्र ही निभाता है, इसीलिए किसी भी छात्र के वर्तमान और भविष्य को सफल बनाने में उसके शिक्षक और उसके दोस्तों का योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। वैसे तो गुरु-शिष्य-मित्र की महान परम्परा भारत की संस्कृति का आदिकाल से एक अहम और पवित्र हिस्सा रही है। लेकिन हमारे जीवन में माता-पिता हमारे प्रथम दोस्त और गुरु है, क्योंकि वो ही हमारा इस निराली दुनिया से परिचय करवाते हैं और हमको जीवन जीना सिखाते हैं। इसलिए हमेशा कहा जाता है कि जीवन के सबसे पहले गुरु और दोस्त हमारे माता-पिता होते हैं। एक अच्छा शिक्षक और मित्र अपना पूरा जीवन अपने दोस्तों या छात्रों को अच्छा ज्ञान और सही रास्ता दिखने में लगा देता है। शिक्षक और मित्र हमेशा हमें सफल होने का रास्ता दिखाते हैं और हमारे चरित्र का सर्वांगीण विकास करके उसका सही ढंग से निर्माण करते हैं। वे हमें जिंदगी में एक जिम्मेदार और अच्छा इंसान बनने में हमारी मदद करते हैं। वो ही हमें जीवन जीने का असली सलीका सिखाते हैं और वो ही हमें अपने जीवन पथ पर ताउम्र सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं। जिस तरह से शिक्षक और मित्र हमें शिक्षा, साथ और ज्ञान के जरिए बेहतर इंसान बनने के लिए मेहनत करता है। इस तरह साहिल के जीवन में बहुत से शिक्षकों और दोस्तों का योगदान रहा है जिनका वर्णन भी जरूरी हो जाता है क्योंकि उनके वर्णन के बिना साहिल की शिक्षा पूर्ण नहीं होती है। अध्यापकों का हमारे जीवन में योगदान अतुलनीय है। उनके बिना हमारा जीवन अधूरा है। वे हमारे जीवन के निर्माता होते हैं और उनके प्रति हमारा आभार शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। अध्यापक हमारे मार्गदर्शक, प्रेरक और सच्चे साथी होते हैं, जिनके बिना हमारे जीवन की कल्पना अधूरी है।

महान् व्यक्ति और उनके योगदान

डॉ० जसबीर सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी विभाग

डॉ. जसबीर सिंह:- ये हिन्दी विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर हैं। ये साहिल के साहित्यिक गुरु रहे हैं। जब से इनसे मुलाकात हुई थी तब से साहिल इनसे बहुत प्रभावित हुआ और तभी से सबसे पहले इनका आशीर्वाद लेने जाता था। इन्होंने साहिल को 'एक सौ सैंताली' की उपाधि दी और इसी से इनको पुकारते थे। इनके साहित्यिक अनुभवों से यह खूब प्रेरित हुआ। इनकी कक्षाओं में पढ़ने में आनंद ही बहुत आता था। इन्होंने कभी भी निराश नहीं किया। इन्होंने साहिल को प्यार, सत्कार और सम्मान दिया। इनको डीएवी कॉलेज, चीका के प्राचार्य पद पर काम करने का सम्मान प्राप्त हुआ। इनकी साहित्यिक यात्रा बहुत लंबी है। इन्होंने विभिन्न कृतियों को रचा और हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। इनको विभिन्न लोकप्रिय साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित भी किया जा चुका है। ये बहुत ही नर्म और गर्म, मेहनती, मिलनसार समाज सेवी, परिवर्तनकारी व्यक्ति हुए हैं और इनके कार्यों को वर्णित करने में शब्द ही कम पड़ जाते हैं। ये अपनी इन प्रवृत्तियों को आज तक कायम रखे हुए हैं। इन्होंने साहिल का हर परिस्थिति में साथ दिया और मार्गदर्शन किया। इनके द्वारा साहिल के जीवन में दिए गए योगदान को हमेशा याद रखा जाएगा। ये आज प्राचार्य पद पर कार्यरत हैं। जब से इन्होंने इस पद को संभाला है तब से कॉलेज में बहुत से परिवर्तन हुए हैं। इनका प्रभाव साहिल पर भी पड़ा। इनके द्वारा अनेक प्रकार के शोधकार्य, समाज सेवा और साहित्य सेवा आदि कार्य किये गए हैं।

**"गुरु के चरणों में है ज्ञान का खजाना,
उनकी सेवा में ही है जीवन का ठिकाना।
हर कठिनाई को सरल बनाया आपने,
हमेशा रहेंगे आपके आभारी, यही है
हमारा वादा।**

डॉ. राजेन्द्र सिंह:- ये इतिहास विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर हैं। इनके साथ साहिल के अनुभव बहुत ही सुंदर और यादगार रहे हैं। सबसे पहले इन्हीं के साथ साहिल की बातचीत शुरू हुई थी। इनकी कक्षाओं में जाने से विद्यार्थी डरते थे क्योंकि वे बहुत ज्यादा लिखवाया करते थे और इनको लिखने की आदत नहीं थी इसलिए कक्षाओं में आते नहीं थे। इनके लिखवाने के कारण साहिल की जो लिखने की कला थी वह बहुत फली फूली। ये बहुत ही मिलनसार व्यक्ति हुए हैं। इन्होंने साहिल को कभी भी निराश नहीं किया और इनकी समस्या का समाधान कर देते थे। इन्होंने जब साहिल को "राष्ट्र स्तरीय निबंध लेखन प्रतियोगिता" में प्रतिभागिता करने के लिए कहा तो इन्होंने तुरंत प्रभाव से उसमें प्रतिभागिता की और प्रथम पुरस्कार भी प्राप्त किया। इनको बहुत खुशी हुई और साहिल को शुभकामनाएं और आशीर्वाद दिए। इन्होंने अपने कर्तव्यों का निर्वहन बखूबी किया। आज भी ये स्वभाव से बड़े सहायक और सम्मान योग्य व्यक्ति हैं। इन्होंने बहुत से कॉलेज स्तरीय और एनएसएस और एनसीसी के कार्यक्रमों को बड़े ही सफल ढंग से संपन्न किया। इन्होंने साहिल की हर परिस्थिति में सहायता की । इनके मार्गदर्शन ने साहिल को खुशी से विह्वल कर दिया। इन्होंने बहुत से ऐतिहासिक विषयों पर पुस्तकें लिखी है। आज भी अपने कार्य में लगे हुए हैं। इन्होंने बहुत से राज्य स्तरीय और विश्वविद्यालय स्तरीय कार्यक्रमों और सम्मेलनों में भाग लिया और इनके शोध पत्र विभिन्न संस्थाओं द्वारा प्रकाशित किए जा चुके हैं। ये एनएसएस कार्यक्रमों से भी जुड़े रहे हैं।

डॉ० राजेन्द्र सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर इतिहास विभाग

आपके सिखाए सबक हैं अनमोल,
हर शब्द आपका है हमें अनुकूल।
आपकी मेहनत और धैर्य के लिए,
गुरूजी, आपको दिल से धन्यवाद।"

डॉ. जसविंदर सिंह:- ये पंजाबी विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर हैं। इन्होंने भी साहिल को बहुत प्यार और सम्मान दिया। ये बहुत ही मिलनसार और सम्माननीय व्यक्ति हुए हैं। ये बहुत ही खुशमिजाज प्रवृत्ति के व्यक्ति हुए हैं। इनसे मुलाकात और बातें करने पर ऐसा लगता था कि सिर्फ इनके साथ बातचीत करते रहें। ये पंजाबी भाषा में बात करते हैं और इनकी पंजाबी बोलने में कितनी शुद्धता है। इन्होंने साहिल को 'एके-47' की उपाधि दी और इसी से इनको पुकारते थे। इनके साथ जितना भी साहिल का सफ़र रहा है उसके आधार पर कहा जा सकता है कि इनसे एक परिवार के सदस्य की तरह प्यार करते रहे। इन्होंने गलती करने पर भी बड़े प्यार से समझाया। इनके साथ का जीवनभर प्रभाव पड़ता रहेगा। इनके साथ साहिल ने एनसीसी के कार्यक्रमों, जन जागरूकता रैलियों और प्रदर्शनी में काम किया। आज भी ये अपने स्वभाव के लिए जाने जाते हैं। इन्होंने साहिल को कभी भी किसी भी बात के लिए मना नहीं किया जो भी इनकी समस्या होती थी तो ये इनको बताया करते थे और उसका समाधान भी कर देते थे।

डॉ० जसविंदर सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर पंजाबी विभाग

शिक्षा की दौलत से अमीर बनाते हैं,
हर मुश्किल को आसान बनाते हैं।
गुरूजी, आपका धन्यवाद है अर्पण,
आपके बिना जीवन में नहीं होता कोई परिवर्तन।"

डॉ. वीरेंद्र पाल सिंह:- ये अर्थशास्त्र विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर हैं। इन्होंने भी साहिल को खूब प्यार और सम्मान दिया। आरंभ में साहिल का इनसे ज्यादा लगाव नहीं था, फिर जैसे-जैसे इनके बारे में पता चलता गया वैसे-वैसे इनसे प्रभावित होता गया। ये ऐसे व्यक्ति रहे जिन्होंने हमेशा तथ्यों पर आधारित बात की। ये हर बात को सवालों की कसौटी पर कसते थे और फिर निष्कर्ष निकालते थे। इनकी "नाचने" की शैली बहुत ही अनोखी थी और इसलिए जब भी एन.एस.एस. शिविर आयोजित किए जाते तो इनका नाच देखने के लिए बड़ी संख्या में बच्चे आते रहे। ये किसी भी काम को करने से मना नहीं करते थे, जो भी समस्या होती थी उसका समाधान करने के हर संभव प्रयास करते रहे। चाहे कॉलेज में किसी भी तरह की आवश्यकता है उसके लिए नई-नई योजनाएं लाते थे। इनके साथ साहिल की बहुत बहस भी हुई। लेकिन फिर भी इनके साथ मिलकर काम किया। इनका विवेक एक अर्थशास्त्री की तरह चलता रहा है। ये अपनी नीतियों को उसी की तरह बनाते रहे। इनके पास एनएसएस इकाई का कार्यभार है। इनके अंदर साहिल को बहुत कड़वाहट दिखाई देती रही। लेकिन कभी कभार दरियादिली भी दिखाई दी। इस प्रकार कहा जा सकता है कि ये मिलनसार और सम्मान योग्य व्यक्तियों में से एक रहे हैं।

डॉ० वीरेंद्र पाल
एसोसिएट प्रोफेसर अर्थशास्त्र विभाग

जीवन के पथ पर चलते-चलते,
आपने हमें राह दिखाई।
आपके बिना हम खो जाते,
शुक्रिया, आप हमारे शिक्षक बनकर
आए।"

प्रो. नीरज सिंह:- ये राजनीति विज्ञान विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं। इनके साथ कॉलेज में साहिल का जो सफ़र रहा, वह बहुत ही सुन्दर और यादगार है। इन्होंने कभी भी किसी समस्या का समाधान करने से मना नहीं किया। यदि साहिल के लिए कोई लाभकारी या गैर-लाभकारी काम होता तो इन्होंने कभी भी हिचकिचाहट नहीं की। इनके आदेशों का सम्मान करते हुए उनको बखूबी किया जाता था। इसलिए ये साहिल के प्रिय अध्यापकों में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इन्होंने साहिल का कॉलेज में हर परिस्थिति में साथ दिया। वह परिस्थिति चाहे कितनी ही छोटी या कितनी ही बड़ी क्यों न हो। ये सिर्फ यह कहते थे कि आप सभी केवल पढ़ें और आगे बढ़ते जाएं। यदि आपको किसी भी तरह की समस्या है तो मुझे बताओ, मैं तुम्हारे साथ हूं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि इन्होंने सभी अध्यापकों से ज्यादा प्यार, सत्कार और सम्मान दिया है। ये बहुत ही वफ़ादार, ईमानदार, मिलनसार और सम्मानित व्यक्ति हुए हैं। आज भी ये अपने स्वभाव और चरित्रवान व्यक्ति के रूप में प्रसिद्ध हैं। इस तरह इन्होंने एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी के रूप में एनएसएस शिविरों और विश्वविद्यालय स्तरीय गतिविधियों को संपन्न करवाया। साहिल और राज ने इनको स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया जिससे इनको बहुत खुशी हुई। इन्होंने साहिल को प्रायः मार्गदर्शन दिया। इनके द्वारा साहिल के जीवन में दिये गये योगदान बहुत अमूल्य और अतुलनीय हैं।

डॉ० नीरज सिंह
अस्टिंट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान विभाग

[signature] 08.05.2025

शिक्षा का दीपक जलाया आपने,
हर अंधेरे को दूर भगाया आपने।
हमेशा रहेंगे आपके ऋणी,
धन्यवाद करता हूँ मैं शिक्षक को दिल से यही।"

डॉ. सुनील कुमार:- ये हिंदी विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर हैं। इन्होंने साहिल को कुछ ही दिनों तक पढ़ाया और फिर इनका तबादला दूसरे स्थान पर हो गया। फिर भी जितना इनके बारे में जान पाया उसके आधार पर कहा जा सकता है कि ये मिलनसार, ईमानदार, काम के प्रति वफादार और सम्मान योग्य व्यक्तियों में से एक रहे हैं। इनके साथ साहिल की आज भी मुलाकातें होती रहती हैं। जब भी किसी भी तरह का कार्यक्रम होता है तो इनको भी आमंत्रित किया जाता है। इन्होंने डी.ए.वी. कॉलेज, पेहवा में हुए " पृथुद्क उत्सव 2024" साहिल की बहुत सहायता की और इनके साथ बहुत समय बिताया। ये बहुत ही नर्म और सहनशील व्यक्ति हुए। ये इनके साथ हर तरह की गतिविधियों में शामिल होने के लिए हमेशा संपर्क करते रहते हैं। जब भी इनके साथ साहिल की मुलाकात होती है तो इनको मिलकर बहुत खुशी होती है। इनके द्वारा आयोजित निबंध लेखन प्रतियोगिता में साहिल ने प्रतिभागिता प्रमाण-पत्र प्राप्त किया। इस तरह इनके साथ जितना भी साहिल का सफ़र रहा है उसके आधार पर कहा जा सकता है कि इनका साहिल के जीवन में बहुत योगदान रहा है। आज ये एस०ए० जैन (पी०जी०) कॉलेज, अंबाला शहर में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। वहां पर एनएसएस कार्यक्रम के अधिकारी भी है। इन्होंने बहुत से सेमिनारों और कार्यक्रमों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। इनकी शैक्षणिक और साहित्यिक अवधि बहुत लंबी व अनुभवों से भरी है। इनके अनेक शोध पत्र विभिन्न संस्थाओं द्वारा सम्मानित और प्रकाशित किए जा रहे हैं।

डॉ० सुनील कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी विभाग
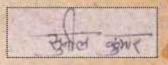
ज्ञान का दीपक जलाया आपने,
हर कठिनाई से हमें बचाया आपने।
शब्दों में बंधे नहीं, उस कृपा का आभार,
जो आपने सिखाया, वह सदा रहेगा
यादगार।

प्रो. सुनीता देवी:- ये अंग्रेजी विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं। जब साहिल पहली बार कॉलेज में गया तो इनकी कक्षा में ही उसका परिचय हुआ था। इन्होंने साहिल के साथ पहली बार बी०ए० प्रथम वर्ष में बातचीत की थी। तब इनकी कक्षाएं कक्ष नं 09 में लगा करती थीं। इन्हें अंग्रेजी विषय में बहुत निपुणता हासिल थी। इनके साथ साहिल के अनुभव बहुत ही सुन्दर रहे। इस तरह इनके साथ जितना भी साहिल का सफ़र रहा है उसके आधार पर कहा जा सकता है कि इनका साहिल के जीवन में बहुत योगदान रहा है। इनके पढ़ाने का तरीका अन्यों की तुलना में अलग था क्योंकि ये पहले स्वयं पढ़ाते और अगले दिन साहिल से पढ़वाया करतीं थीं जिससे विषय के बारे में जानकारी प्राप्त करने में आसानी होती थी। इन्होंने साहिल की कॉलेज में बहुत मदद की। इस प्रकार कहा जा सकता है कि ये मिलनसार, ईमानदार और काम के प्रति वफादार रहीं हैं। इन्होंने साहिल को बहुत ही प्यार और सम्मान दिया। इनसे साहिल ने विषय से संबंधित बहुत जानकारी प्राप्त की। इन्होंने निःसंकोच होकर मदद भी की। साहिल और अन्यों के साथ एनएसएस और रेडक्रास प्रशिक्षण शिविरों में साथ रहीं।

प्रो० सुनीता देवी
असिस्टेंट प्रोफेसर अंग्रेजी विभाग

9.05.2025

आपने हमें सपने दिखाए,
उसे साकार करने के रास्ते बताए।
आपके स्नेह और धैर्य का आभार,
आपकी छांव में हम हैं खुशहाल।

प्रो. ज्योति रानी:- ये हिंदी विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं। यह डॉ० सुनील कुमार के स्थान पर कॉलेज में आईं। आरंभ में यह स्वभाव से बहुत ही गंभीर थी, जैसे-जैसे कक्षाएं शुरू हुई और साहिल के साथ वार्तालाप होना लगा वैसे-वैसे यह इनके साथ घुल-मिल गयीं। इनके स्वभाव में परिवर्तन आया और यह साहिल के साथ एक दोस्त की तरह रहती थीं। इन्होंने इनको खूब प्यार, सत्कार, मान-सम्मान और प्रतिष्ठा प्रदान की। इस तरह इनके साथ जितना भी साहिल का सफ़र रहा है उसके आधार पर कहा जा सकता है कि इनका साहिल के जीवन में बहुत योगदान रहा है। जब भी इनकी कोई समस्या होती थी तो उस समस्या का आभास इनको हो जाता था और उसका समाधान करने में भी तत्पर रहतीं थीं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि यह मिलनसार, ईमानदार, काम के प्रति वफादार और सम्मान योग्य व्यक्तियों में से एक रहीं। इनके साथ साहिल की विषय से संबंधित बहस हो जाती थी, लेकिन इन्होंने कभी भी एक दूसरे के साथ बुरा व्यवहार नहीं किया। यह एकदम मधुरता और कोमलता से बातचीत करती थीं। इनकी वाणी पर डॉ० जसबीर सिंह और डॉ० सुनील कुमार आदि का विशेष प्रभाव देखा जा सकता है। यह डॉ० सुनील कुमार की तरह पढ़ाया करतीं हैं। इनके पढ़ाने के तरीके में ऐसा प्रभाव होता था कि पहली बार में ही समझ आ जाता था। इनके चरित्र की यही सबसे बड़ी विशेषता है।

प्रो० ज्योति रानी
असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी विभाग

Jyoti

शब्दों में नहीं बाँध सकते,
आपकी मेहनत का ये सिला।
धन्यवाद मैम आपका,
आपने हमें बनाया काबिल और बला।

प्रो. कुणाल वर्मा:- ये अंग्रेजी विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं। इनको हम खुशनुमा व्यक्ति की उपाधि भी दे सकते हैं, क्योंकि ये हमेशा मुस्कराते रहते थे। जब भी साहिल इनकी तरफ देखा करता तो ये मुस्कराने लगते। इन्होंने भी हर समस्या का समाधान करने में बहुत मदद की। इन्होंने साहिल को बहुत प्यार, सत्कार, मान-सम्मान और प्रतिष्ठा प्रदान की। इन्होंने साहिल की नाटक की तैयारी भी करवाई। इस प्रकार कहा जा सकता है कि ये मिलनसार, ईमानदार और काम के प्रति वफादार और सम्मान योग्य व्यक्तियों में से एक रहे हैं। इन्होंने साहिल का जिला स्तरीय रेडक्रास प्रशिक्षण शिविर, प्रतिभा खोज प्रतियोगिता और कॉलेज स्तरीय कार्यक्रमों में हमेशा साथ दिया। साहिल को इन्होंने एक श्रेष्ठ विद्यार्थी बनाया। ये साहिल को हमेशा पढ़ाई से संबंधित जानकारी देते रहते थे।

प्रो० कुणाल वर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर अंग्रेजी विभाग
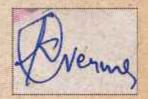
शिक्षा की दौलत से अमीर बनाते हैं,
हर मुश्किल को आसान बनाते हैं।
गुरूजी, आपका धन्यवाद है अर्पण,
आपके बिना जीवन में नहीं होता कोई परिवर्तन।"

प्रो. वीरेंद्र सिंह:- ये शारीरिक शिक्षा विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर रहे हैं। इनके साथ साहिल का सफ़र कुछ समय तक ही रहा। लेकिन इस दौरान इनके बारे में ये जितना भी जान पाए उससे यह कहा जा सकता है कि ये मिलनसार, ईमानदार, काम के प्रति वफादार और सम्मान योग्य व्यक्तियों में से एक रहे हैं। इनके साथ जितनी भी बातचीत हुई और इन्होंने साहिल को बहुत ही मान-सम्मान, प्रतिष्ठा और प्यार दिया। ये गान और शेरों-शायरी में भी बहुत निपुण कलाकार हुए हैं। ये आज भी इनके साथ जुड़े हुए हैं। इन्होंने खेल प्रतियोगिता 2024, एनएसएस कार्यक्रमों, प्रतिभा खोज प्रतियोगिता और पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रमों को सफल बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इनके अंदर एक विशेष कला और प्रतिभा थी। इनके बोलने का अलग अंदाज रहा। इनकी वाणी में अलग मिठास रही। जब भी ये बात करते तो इनकी बातों को सुनते रहने का मन करता था। साहिल के साथ इन्होंने हमेशा अच्छा व्यवहार किया।
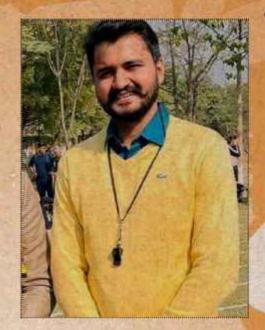
प्रो० वीरेंद्र सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर शारीरिक शिक्षा विभाग

शिक्षक दीप हैं जो जलते रहते हैं,
बिना थके हमें राह दिखाते रहते हैं।
उनका आशीर्वाद है अनमोल,
जीवन की नैया को किनारे लगाते रहते हैं।

डॉ. परमजीत कौर:- यह लाइब्रेरी में एसोसिएट प्रोफेसर रहीं। आरंभ में साहिल जब लाइब्रेरी में गया था तो इन्होंने नमस्ते करने के लिए कहा था, तब से साहिल प्रतिदिन इनको नमस्ते करता और फिर बैठता था। इस तरह इनके बीच वार्तालाप होने लगी। इन्होंने भी साहिल को खूब प्यार, सत्कार, मान-सम्मान और प्रतिष्ठा प्रदान की। इस तरह इनके साथ जितना भी साहिल का सफ़र रहा है उसके आधार पर कहा जा सकता है कि इनका साहिल के जीवन में बहुत योगदान रहा है। जब भी साहिल को किसी भी पुस्तक की आवश्यकता होती थी तो साहिल इनको कह देता था तथा यह इनको पुस्तक दे देती थीं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि ये मिलनसार, ईमानदार, वफादार और सम्मान योग्य व्यक्तियों में से एक रहीं है। इनके समय में साहिल ने पुस्तकालय से विभिन्न तरह की पुस्तकें पढ़ी। यह जानतीं थीं कि साहिल एक होनहार विद्यार्थी है और वह किताबों को संभालकर रखेगा। उसको किताबें उपलब्ध करवाती थीं। कभी कभार जब उनका सहायक पुस्तकालय में उपस्थित नहीं होता था तो साहिल के विश्वास पर अपना कार्य निश्चित होकर करती थीं। इस तरह साहिल इनकी हर कार्य में मदद करता था।

प्रो० परमजीत कौर
एसोसिएट प्रोफेसर पुस्तकालय विभाग

बिना किसी लालच के, निस्वार्थ भाव से,
ज्ञान की गंगा बहाई आपने।
शत-शत नमन है उस मूर्ति को,
जिसने हमें इंसान बनाया आपने।

प्रो. पूर्णिमा और प्रो. वैशाली:- ये बी.कॉम विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं। इनसे साहिल का परिचय सबसे पहले "रक्षाबंधन" के उपलक्ष्य में आयोजित प्रतियोगिता में हुआ था। इस दौरान इन्होंने एक दूसरे के बारे में जाना। जब भी साहिल कहीं मिलते था तो आपस में एक-दूसरे का हाल जरूर पूछते थे। यें बहुत ही खुशमिज़ाज, मज़ाकिया अंदाज़, मिलनसार, ईमानदार और सम्मान योग्य व्यक्तियों में से एक रहीं है। इन्होंने साहिल की जिला स्तरीय युवा प्रतिभा खोज प्रतियोगिता और सिविल अस्पताल, कैथल में आयोजित एक कार्यक्रम में भी खूब सहायता की और इन्होंने बहुत ही मौज मस्ती की। इन्होंने साहिल को बहुत प्यार और सम्मान दिया। इसलिए इनका साहिल के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इन्होंने यही नहीं हर तरह की गतिविधियों में साथ दिया है और समस्या होने पर उसका समाधान करने से मना नहीं किया। इस तरह इनके साथ जितना भी साहिल का सफ़र रहा है उसके आधार पर कहा जा सकता है कि इनका साहिल के जीवन में बहुत योगदान रहा है।

प्रो० पूर्णिमा और प्रो० वैशाली
व्यवसाय विभाग
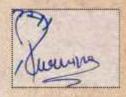
आपका हर उपदेश अनमोल है,
जीवन के हर मोड़ पर साथ है।
कैसे करें शुक्रिया आपका,
आपसे ही तो हमारी पहचान है।

डॉ. सुमन यादव:- यह पुस्तकालय विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर हैं। इनसे साहिल का परिचय आरंभ में उस दिन हुआ था जब सिर्फ ये लाइब्रेरी में विजिटर के तौर पर आतीं थी तथा जब इनकी पुस्तकालय विभाग में नियुक्ति हुई तो तब इनका पूर्ण परिचय हुआ। ये आरंभ में स्वभाव से बहुत ही कर्कश और कठोर थी लेकिन अंदर से कोमल और नर्म थीं। इन्होंने साहिल को बहुत प्यार और सम्मान दिया। इन्होंने समस्या का समाधान करने के लिए कभी मना नहीं किया। इस प्रकार कहा जा सकता है कि ये मिलनसार, ईमानदार, वफादार और सम्मान योग्य व्यक्तियों में से एक रहीं है। जब से साहिल का इनसे परिचय हुआ तब से इन्होंने साहिल की सहायता करने में कभी भी हिचकिचाहट नहीं की। इन्होंने हर कार्य में तुरंत प्रभाव से मदद की। इन्होंने हर तरह की पुस्तकालय विभाग के द्वारा बनाई जाने वाली योजनाओं से साहिल को लाभान्वित करने का प्रयास किया। जब एनडीलआई पंजीकरण हो रहे थे तो इनके प्रयासों से ही साहिल को उसमें सदस्य बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस तरह इन्होंने मिलकर बहुत से कार्यक्रमों को सफल बनाया। इन्होंने डिजिटल लाइब्रेरी जागरूकता कार्यक्रम को भी बखूबी संचालित किया। इस तरह इनके साथ जितना भी साहिल का सफ़र रहा है उसके आधार पर कहा जा सकता है कि इनका साहिल के जीवन में बहुत योगदान रहा है।

डॉ० सुमन यादव
एसोसिएट प्रोफेसर पुस्तकालय विभाग
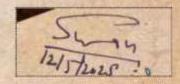
सिखाया आपने हमें ज्ञान का अनमोल खज़ाना,
हर कठिनाई में आपने दिखाया रास्ता सुहाना।
आपके बिना अधूरी है हमारी कहानी,
आपकी मेहनत ने बनाई हमारी ज़िंदगी स्वर्णिम।

प्रो० नीलम देवी:- यह वर्तमान में शारीरिक शिक्षा विषय की असिस्टेंट प्रोफेसर हैं। इनसे पहले प्रो० वीरेंद्र सिंह इस विषय को पढ़ाया करते थे। इनसे साहिल की मुलाकात द्वितीय वर्ष में ही हुई। सबसे पहले कॉलेज में हुए कार्यक्रम में प्रतिभागिता करने के कारण साहिल से परिचित हुईं। इन्होंने जब खेलकूद प्रतियोगिता 2025 का आयोजन किया तो साहिल ने इनका काम में साथ दिया और कार्यक्रम को सफल बनाया। जिसके कारण इन्होंने साहिल, अजय और प्रिंस को सम्मानित भी किया। इनका स्वभाव बड़ा ही नर्म, गर्म, सहनशील, काम के लिए निष्ठा, छोटों के साथ उचित व्यवहार और बच्चों को अच्छे मार्ग पर चलाना आदि प्रवृत्ति का धनी रहीं हैं। इस तरह इनके साथ जितना भी साहिल का सफ़र रहा है उसके आधार पर कहा जा सकता है कि इनका साहिल के जीवन में बहुत योगदान रहा है। इन्होंने साहिल का हमेशा साथ दिया है। चाहे वह इनके विषय के अंतर्गत हो या कॉलेज की अन्य गतिविधियों से संबंधित हों। इन्होंने साहिल को खूब प्यार और स्नेह दिया। ये आज भी अपनी इन्हीं प्रवृत्तियों को कायम रखे हुए हैं।

प्रो० नीलम देवी
असिस्टेंट प्रोफेसर शारीरिक शिक्षा विभाग

Neelam Devi
09/05/2025

हर शब्द आपका, प्रेरणा का है सागर,
आपके आशीर्वाद से ही मैंने पाया है आगे का सफर।
आपके बिना अधूरी है मेरी कल्पना,
धन्यवाद है आपको, मेरी प्रेरणा।

प्रो. नेहा बंसल:- यह अंग्रेजी विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं। इनकी कक्षाओं में तो साहिल कभी गया ही नहीं, फिर भी यह साहिल को जानती और पहचानती थीं। जितना भी इनके बारे में साहिल जान पाया, उससे यह कहा जा सकता है कि यह बहुत ही स्वभाव से नरम, सहनशील और सम्मान योग्य व्यक्तियों में से एक रहीं है। जितनी यह बाहर से कर्कश और कठोर दिखाई देती थी, उतनी अंदर से कोमल और नर्म थीं। इन्होंने भी साहिल को खूब प्यार, सत्कार, मान-सम्मान और प्रतिष्ठा प्रदान की।

प्रो० नेहा बंसल
असिस्टेंट प्रोफेसर अंग्रेजी विभाग

माँ-बाप ने तो जन्म दिया,
पर जीना सिखाया आपने।
हर मुश्किल राह में बनकर सहारा,
आगे बढ़ना सिखाया आपने।

प्रो० जसबीर कौर:- यह संस्कृत विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं। इनसे साहिल की मुलाकात वैसे तो बहुत समय पहले हुई थी लेकिन अच्छी तरह से "रेडक्रास प्रशिक्षण शिविर 2025" में हुई थी। उस दिन इन्होंने इनको भली-भांति जान लिया। उसके पश्चात मुलाकातों का सिलसिला जारी रहा। इनकी विशेषता यह रही है कि यह किसी से ज्यादा बात नहीं करती और परिचितों से एकदम मधुरता और कोमलता के साथ बात करती हैं। इनकी वाणी में कोमलता, सम्मान, सत्कार और प्रेम का भाव झलकता है। इन्होंने साहिल को बहुत प्यार और सम्मान दिया।

प्रो० जसबीर कौर
असिस्टेंट प्रोफेसर संस्कृत विभाग

अक्षर-अक्षर मुझे सिखाया,
शब्दों का अर्थ समझाया।
हर गलती को प्यार से सुधारा,
आपने ही मुझे काबिल बनाया।

नरेंद्र सिंह:- इनसे साहिल का परिचय सर्वप्रथम द्वितीय वर्ष में हुआ था। इनको साहिल जानता तो पहले से ही था लेकिन अच्छी तरह से बातचीत नहीं होती थी। इन्हें साहिल का परिचय कॉलेज में होने वाले कार्यक्रमों में प्रतिभागिता करने के दौरान हुआ। इन्होंने हर कदम पर बहुत साथ दिया। चाहे वह वित्तीय सहायता हो या फिर कॉलेज के शैक्षणिक मामले हों। इनके स्वभाव में बड़ी ही नर्मता और गर्मता का समन्वय रहा है। ये हर किसी को अपनी गरिमामयी उपस्थिति से प्रभावित करते रहे। ये कॉलेज के वित्त और पंजीकरण विभाग में आज भी कार्यरत हैं। इन्होंने साहिल को हर शैक्षणिक योजनाओं से लाभान्वित करने का प्रयास किया। ये हमेशा विद्यार्थियों के सहायक रहे। इन्होंने साहिल का हर कार्य में भरपूर साथ दिया। वो कार्य चाहे कितना ही बड़ा हो या कितना छोटा। हर कार्य में मददगार साबित हुए। इनका कहना था कि आप आगे बढ़ो, जहां कहीं भी जरूरत हो एक बार फोन कर लेना उसका समाधान किया जाएगा। प्रो० अवतार सिंह की अनुशंसा पर ही इन्होंने साहिल की तृतीय वर्ष की कॉलेज फीस न लेने का निर्णय का समर्थन किया।

प्रो० नरेंद्र सिंह
पंजीकरण और वित्त विभाग
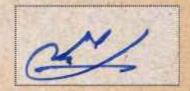
ज्ञान का दीपक जलाया आपने,
जीवन का सच्चा अर्थ सिखाया आपने।
कोटि-कोटि नमन है आपको नरेंद्र सर,
अंधेरे से निकालकर रोशनी में लाया आपने।

नीरज सिंह:- इनसे साहिल की मुलाकात वैसे तो प्रथम वर्ष में ही हो गई थी लेकिन अच्छी तरह से ये एक-दूसरे के स्वभाव से परिचित नहीं थे। द्वितीय वर्ष में प्रवेश करते ही इनके साथ संपर्क बढ़ा और ये स्वभाव से बड़े सहायक प्रवृत्ति के जाने-माने गए। इन्होंने हर कार्य में साहिल की मदद की । जब भी किसी तरह के शैक्षणिक समस्या हो जाती थी तो ये तुरंत प्रभाव से उसका समाधान करने के प्रयास करते रहे। यदि कोई साहिल को लाभान्वित करने वाली योजना होती थी तो तुरंत ही इनका नाम सबसे पहले भेज देते थे। आज भी साहिल के साथ जुड़े हुए हैं। ये वर्तमान में कॉलेज के पंजीकरण विभाग में कार्यरत हैं। ये स्वभाव से बड़े सहायक, नरम-गरम, परिश्रमी, साहसी और कर्मठ प्रवृत्ति के व्यक्तित्व के धनी हैं। इन्होंने हमेशा अपने कार्य को महत्व दिया है और पूरी मेहनत और लगन से काम किया। इन्होंने कभी भी काम करने के लिये साहिल को नाराज़ नहीं किया।

प्रो० नीरज राणा
पंजीकरण विभाग
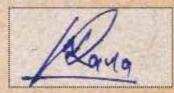
आप ज्ञान के सागर हो,
आपने मेरे जीवन को संवारा है,
आप मेरा प्रकाश बने हो,
आपने मुझे उजाला दिखाया है।"

प्रो० आकाशीप सिंह:- ये पंजाबी विषय के अध्यापक हैं। इन्होंने डीएवी कॉलेज, चीका में कुछ समय के लिए अध्यापक के पद पर काम किया। इनके साथ साहिल का पहला संवाद कॉलेज में एक कार्यक्रम के दौरान हुआ था, जब सेमिनार हॉल में "पर्यावरण संरक्षण" को लेकर संक्षिप्त फिल्म दिखाई गई थी। उसके बाद ये दोनों एक दूसरे को जान गए । कुछ समय बाद कॉलेज से इनको जाना पड़ा। फिर वे कभी कभार कॉलेज में आते रहे। एक दिन जब जसबीर सिंह जी को प्राचार्य पद की शुभकामनाएं देने के लिए पहुंचे। तब भी इनसे साहिल की मुलाकात हुई। इसके पश्चात में इन्हें सार्वजनिक प्लैटफॉर्म पर ही देखता रहा। ये स्वभाव से बड़े ही नर्म और मिलनसार हैं। इनकी अपने काम के प्रति बहुत निष्ठा रही है। इन्होंने साहिल को बहुत प्यार और सम्मान दिया।

प्रो० आकाशदीप सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर पंजाबी विभाग

12/5/25

आपका चित्र इस दिल में बस जाता है,
आपकी शिक्षा से जीवन संवर जाता है।"

प्रो० बंटीदास:- ये राजनीति विज्ञान विषय के अध्यापक हैं। इन्होंने हाल ही में डीएवी कॉलेज, चीका में अपने अध्यापन कार्य की शुरुआत की। इनसे साहिल की मुलाकात सबसे पहले राजनीति विज्ञान विषय की कक्षा में हुई थी और फिर ये एक-दूसरे को अच्छी तरह से जान गए । इसके पश्चात ये रेड रिबन क्लब द्वारा सिविल अस्पताल, कैथल में आयोजित एक दिवसीय प्रशिक्षण में भी साथ रहे। ये साहिल के साथ एनएसएस के सात दिवसीय शिविर 2025 में मौजूद रहे। इन्होंने इस शिविर में बहुत ज्ञानवर्धक जानकारी दी और बहुत सहायता की। इससे इनकी सहायतार्थ और सहयोग की प्रवृत्ति का ज्ञान हुआ। इनका स्वभाव बड़ा ही नर्म , सहनशील, निष्ठा से परिपूर्ण, कर्मठ, ईमानदारी से भरा हुआ और सलाहकार प्रवृत्ति का ज्ञात होता है। इन्होंने साहिल को बहुत प्यार और सम्मान दिया।

प्रो ० बंटीदास
असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान विभाग

Bunty Das

आपकी कृपा से मैंने उन्नति की है,
आपकी शिक्षा से मेरे जीवन में रोशनी आई है।"

आचार्य हरिओम शोकल जी:- ये पतंजलि योग संस्था, कैथल में योगाचार्य रहे हैं। इनसे साहिल से मुलाकात एनएसएस शिविर 2024 में हुई थी। ये साहिल को प्रतिदिन योगाभ्यास करवाते थे। इन्होंने साहिल को बहुत योगासन सिखाए थे। इन्होंने बहुत प्यार और सम्मान दिया। इस प्रकार कहा जा सकता है कि ये मिलनसार, ईमानदार और सम्मान योग्य व्यक्तियों में से एक रहे हैं। ये स्वभाव से बड़े सहायक, नरम-गरम, परिश्रमी, साहसी और कर्मठ प्रवृत्ति के व्यक्तित्व के धनी हैं। इन्होंने साहिल को बहुत ज्ञानवर्धक जानकारी दी। इनके द्वारा साहिल के जीवन में दिये गये योगदान चिरस्मरणीय हैं।
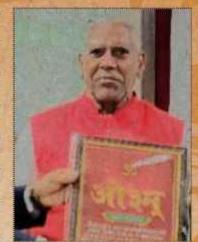
श्री राजेश कुमार:- इनके साथ साहिल की मुलाकात एडमिशन के दौरान हुई थी। ये साहिल के पिता जी के दोस्त भी हुए हैं। ये स्वभाव से बड़े सहायक, नरम-गरम, परिश्रमी, साहसी, ईमानदार और सम्मान योग्य है। इन्होंने कॉलेज में अपना काम बड़े ही लगन और कड़ी मेहनत के साथ किए और आज भी अपनी इन्हीं प्रवृत्तियों को कायम रखे हुए हैं। इन्होंने साहिल को बहुत प्यार और सम्मान दिया हैं। इनके द्वारा साहिल के जीवन में दिए गए मार्गदर्शन को हमेशा याद रखा जाएगा।

Rajesh.

श्री विनोद कुमार:- इनके साथ साहिल की आरंभिक बातचीत और परिचय लाइब्रेरी में हुआ, जब ये वहां पर कार्यरत थे। इनका कार्य तकनीकी रहा। इन्होंने साहिल को बहुत प्यार दिया है। जब भी कॉलेज में किसी भी तरह का तकनीकी काम होता था तो मुख्य रूप से तो इन्हीं के द्वारा किया जाता था लेकिन इनके साथ रहते हुए साहिल भी उनसे काम सीख लिया। साहिल को तो ये कई बार कह भी देते थे कि जब तक तुम हो तों मुझे किसी भी तरह की समस्या नहीं हैं क्योंकि इनको साहिल के ऊपर पूरा विश्वास था कि वह उस काम को बखूबी कर सकता है। ये स्वभाव से बड़े सहायक, नरम-गरम, परिश्रमी, साहसी, ईमानदार, वफादार और काम के प्रति प्रेम भाव की प्रवृत्ति के धनी रहे हैं।

श्रीमती काजल जी:- इनको साहिल द्वितीय वर्ष से जानता था लेकिन अच्छी तरह से इसके उतरार्द्ध में जान पहचान हुई। सबसे पहले इन्होंने प्रिंसीपल दफ़्तर में काम किया तथा अब लाइब्रेरी में कार्यरत हैं। इन्होंने अपने काम को पूरी लगन और मेहनत से किया। इनको साहिल का परिचय सर्वप्रथम कॉलेज में होने वाले कार्यक्रमों में प्रतिभागिता करने के कारण हुआ। इन्होंने कॉलेज में साहिल की बहुत मदद की और इनके साथ एक दोस्त की तरह व्यवहार किया। इस तरह इनकी स्थिति साहिल के इस कॉलेज के दौर में महत्वपूर्ण साबित होती है। इन्होंने भी हर कार्य में साहिल का साथ दिया। इन्होंने अपना कार्य बखूबी किया।

संजय जी और संदीप जी:- इनके साथ साहिल की मुलाकात वैसे तो प्रथम वर्ष से ही हुई थी लेकिन अच्छी तरह से द्वितीय वर्ष में हुई जब इन्होंने एनएसएस और एनसीसी के कार्यक्रमों में एक-दूसरे का साथ दिया। संजय जी के साथ लाइब्रेरी में प्रतिदिन बातचीत होती रही। ये एक-दूसरे के साथ मज़ाक करते रहते थे। इससे कहा जा सकता है कि इनका स्वभाव बड़ा मजाकिया, हंसमुख और जोश से भरा हुआ है। इन्होंने साहिल की हर तरह की समस्या का समाधान बड़े उत्साह से किया। वहीं संदीप जी साहिल के एनएसएस के शिविरों में हमारी मददगार साबित होते रहे। इन्होंने साहिल को पेड़ पोधों की देखभाल करना और साफ सफाई रखना सिखाया। ये हर तरह के औजार साहिल के ऊपर विश्वास करके दे देते थे। ये कॉलेज की सुंदरता को बनाए रखने के लिए विभिन्न तरह फूल लगाते और उनकी सुरक्षा करते रहें। इस तरह इनके साथ जितना भी साहिल का सफ़र रहा है उसके आधार पर कहा जा सकता है कि ये स्वभाव से बड़े सहायक, नरम-गरम, परिश्रमी, साहसी, ईमानदार, वफादार और काम के प्रति प्रेम भाव की प्रवृत्ति के धनी रहे। इन्होंने हर तरह की समस्या के दौरान साहिल की बहुत मदद की। इन्होंने बहुत प्यार, स्नेह और सम्मान दिया।

Sanjay Kumar

Sandeep Kumar

श्री जगसीर जी, श्री चांदी राम जी और श्री राजेन्द्र जी:- पहले दो व्यक्तियों के साथ साहिल की मुलाकात वैसे तो प्रथम वर्ष में हुई थी लेकिन अच्छी तरह से द्वितीय वर्ष के आरंभ में हुई और राजेन्द्र सिंह के साथ तृतीय वर्ष के आरंभ में मिला। ये तीनों बड़े ही मेहनती और कुशल ईमानदार व्यक्ति रहे। इन्होंने कॉलेज परिसर को पूरी लगन से साफ और स्वच्छ बनाने का प्रयास किया। कभी कभार इनके साथ साहिल भी काम करने में मदद करता था और इन्होंने हमेशा साहिल की किसी भी बात को मना नहीं किया। श्री जगसीर जी को तो साहिल हर रोज काम करते हुए देखा करता था तथा इनके साथ मज़ाक भी कर लेता था । इस तरह उपरोक्त विवरण के आधार पर कहा जा सकता है कि ये सभी स्वभाव से बड़े सहायक, नरम-गरम, परिश्रमी, साहसी, ईमानदार, वफादार और सम्मान योग्य व्यक्ति हुए हैं।
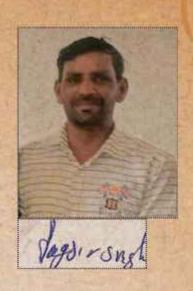
श्री गजे सिंह जी, श्री कली राम जी और श्री नायब सिंह जी:- इनके साथ साहिल की मुलाकात एडमिशन के दौरान हुई थी। ये तीनों बड़े ही मेहनती और कुशल ईमानदार व्यक्ति रहे। इन्होंने अपने अपने पद की निष्ठा का पूर्ण विश्वास के साथ निर्वहन किया है। गजे जी ने भी साहिल को बहुत प्यार दिया। ये बहुत नरम स्वभाव के व्यक्तित्व के धनी थे। नायब जी पंजीकरण विभाग में कार्यरत हैं। इन्होंने हमेशा साहिल का साथ दिया है। जब तृतीय वर्ष में प्रवेश हो रहा था तो इनके आग्रह और प्रो० अवतार सिंह (पूर्व कार्यवाहक प्राचार्य) की आज्ञा से साहिल की हवन यज्ञ में गरिमामयी उपस्थिति के कारण उसकी कॉलेज फीस माफ करने का निर्णय किया गया। वहीं कली राम जी ने भी साहिल को बहुत प्यार और सम्मान दिया। इस तरह उपरोक्त विवरण के आधार पर कहा जा सकता है कि ये सभी स्वभाव से बड़े सहायक, नरम-गरम, परिश्रमी, साहसी, ईमानदार, वफादार और सम्मान योग्य व्यक्ति हुए हैं। वहीं इन्होंने अपने कर्तव्यों का बखूबी पालन किया।

प्रीति:- इनके साथ साहिल की मुलाकात बड़ी अनोखी रही । प्रीति से साहिल का परिचय एनएसएस शिविर 2022-23 में हुआ था। आरंभ में इनको समझना साहिल के लिए बहुत मुश्किल रहा लेकिन जैसे-जैसे इन्होंने एक दूसरे के बारे में जाना तो वैसे-वैसे इनके विचारों से साहिल बहुत ही प्रभावित हुआ। इन्होंने कॉलेज में होने वाले कार्यक्रमों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया और सम्मान भी प्राप्त किया। कॉलेज की हर गतिविधि में ये एक-दूसरे के सहयोग के लिए हमेशा तैयार रहते थे। आज भी यह अपनी इन खूबसूरत प्रवृत्तियों और यादों को बनाए रखें हुए हैं। इन्होंने हमेशा विकट स्थिति में साहिल का साथ दिया। चाहे कॉलेज की हो या फिर किसी अन्य तरह की। भले ही इनके बीच कभी कभार मन मुटाव हो जाता था लेकिन शीघ्र ही उसको ये भुला दिया करते थे। इनके लक्ष्य और काम के प्रति जूनून तथा भावनात्मक दृष्टिकोण संबंधी विचार बहुत ही उच्च रहे। इनके सपनों को पूरा करने में इन्होंने भी बहुत मदद करने के प्रयास किए। इनकी यह विशेष बात रही है कि ये मिलनसार, ईमानदार और अच्छे स्वभाव वाली लड़की रहीं। जब डीएवी कॉलेज, पेहवा में पृथुदक उत्सव आयोजित किया गया जिसमें इन्होंने प्रतिभागिता की। इन्होंने कॉलेज स्तरीय और जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता की। यह दोस्ती का सही अर्थ समझती थी और लोगों के साथ भावनात्मक रूप से जुड़ जाती थी। इनके लिए साहिल कहता है:-

इश्क ने प्रीति से एक दिन पूछ ही लिया,
जब मैं हूं तो यहां तेरा क्या काम है,
तो इन्होंने कहा, जहां तूं नाकाम है,
वहां मेरा ही नाम है।
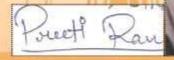
मधुः- इनसे साहिल की मुलाकात एनएसएस शिविर 2022-23 में हुई थी। आरंभ में जब साहिल ने इनको देखा तो यह स्वभाव से बहुत ही कर्कश और कठोर दिखाई देती थी, लेकिन जैसे-जैसे इनके बारे में जानना शुरू किया वैसे-वैसे इनके मन की कोमलता और बड़ों के प्रति सम्मान दिखाई दिया। यह बहुत ही मिलनसार, ईमानदार और सम्मान योग्य लड़कियों में से एक रहीं है। इन्होंने कभी भी अपने हक़ और अधिकारों के साथ समझौता नहीं किया। इनकी यह विशेष बात थी कि ये मिलनसार, ईमानदार और अच्छे स्वभाव वाली लड़की थी। इन्होंने कॉलेज स्तरीय और जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता की। इन्होंने रेडक्रास प्रशिक्षण शिविर में भी प्रतिभागिता की। यह दोस्ती का सही अर्थ समझती थी और लोगों के साथ भावनात्मक रूप से जुड़ जाती थी। हमेशा उनको प्राप्त करने के प्रयास करती रही। इनके साथ साहिल ने बहुत मौज और मस्ती की और कभी-कभी ये इनका मज़ाक भी बनाया करते थे। इनके साथ जितना भी साहिल का कॉलेज में अनुभव रहा है वह बहुत ही खूबसूरत और यादगार रहा है। यहां साहिल लिखता है:-

कहते हैं हौसलों से उड़ान होती है,
सच्ची दोस्ती से ही पहचान होती है,
जिंदगी में सब कुछ आसान लगता है,
जब मधु जैसी दोस्त का साथ होता है।

Madhu

अजय:- इनके साथ साहिल की मुलाकात कॉलेज के आरंभिक महीनों में और पूर्णतः एनएसएस शिविरों में हुई थी। आरंभ में इनको अपनी पढ़ाई से मतलब रहा था जैसे-जैसे समय बीतता गया इनके बीच वार्तालाप होने लगी वैसे-वैसे उसके स्वभाव में परिवर्तन आया। इनकी कक्षाएं अनोखी रही क्योंकि यदि इन दोनों में से कोई कक्षाओं में नहीं जाता था और कॉलेज में आया है तो उसकी सच्चाई बता देते थे। यह एक-दूसरे की टांग खिंचाई करते रहे। जब भी किसी भी तरह का कार्यक्रम आयोजित किया जाता था तो सबसे पहले ये दोनों आगे होते थे। इन्होंने हर समस्या के समाधान करने के लिए कभी भी मना नहीं किया। ये बहुत ही मिलनसार, ईमानदार और सम्मान योग्य व्यक्तियों में से एक रहे हैं। इन्होंने हमेशा विकट स्थिति में साहिल का साथ दिया। चाहे कॉलेज की हो या फिर किसी अन्य तरह की। भले ही इनके बीच में कभी कभार मन मुटाव हो जाता था लेकिन शीघ्र ही उसको ये भुला दिया करते थे। जिला स्तरीय रेडक्रास प्रशिक्षण शिविर, एनएसएस शिविरों और विश्वविद्यालय स्तरीय गतिविधियों में साहिल और अजय ने मिलकर भाग लिया। इस तरह इनकी जोड़ी कॉलेज में लोकप्रिय रही। इसलिए साहिल कहता है:-

अजय हर राह पर तुम्हारा साथ रहा,
तुम्हारे बिना जीवन अधूरा सा रहा,
तुम्हारी दोस्ती का शुक्रिया,
हर पल कॉलेज का जीवन खुशियों से भरा रहा।

बबनजीत:- इनसे साहिल की मुलाकात एनएसएस शिविर 2022-23 में हुई थी। शुरू शुरू में इनके साथ इतनी बातचीत नहीं होती थी। जैसे जैसे एक दूसरे के बारे में जाना तो वैसे वैसे आपस में संपर्क होने लगा। इन्होंने कॉलेज में एनएसएस कैंपों के दौरान और उसके बाद बहुत मौज मस्ती और शरारतें कीं। इन्होंने साथ में एनएसएस कैंप, फेयरवेल पार्टी, होली और डीएवी कॉलेज, पेहवा में आयोजित प्रतियोगिता में प्रतिभागिता की तथा इन्होंने खूबसूरत पलों की तस्वीरें भी खींची। इनकी यह विशेष बात थी कि ये मिलनसार, ईमानदार और अच्छे स्वभाव वाली लड़की थी। यह दोस्ती का सही अर्थ समझती थी और लोगों के साथ भावनात्मक रूप से जुड़ जाती थी। इस प्रकार कहा जा सकता है कि ये बड़ों का आदर करना, कर्तव्यनिष्ठ और सम्मान योग्य लड़कियों में से एक रहीं। साहिल जब इनसे मिला था तो उसने देखा कि यह तो बहुत शांत और सहनशील स्वभाव की लड़की है लेकिन जब उसके बारे में थोड़ा और ज्ञान हुआ तो वह नटखट और शरारत करने वाली लड़की प्रतीत हुई। इन्होंने अपने कॉलेज के दिनों में बहुत मौज-मस्ती की। इसलिए साहिल इनकी दोस्ती को देखकर कहते हैं:-

बबनजीत जैसी दोस्त की अहमियत को कैसे बयां करूं,
हर लम्हा तुम्हारे बिना अधूरा सा लगता है,
शुक्रिया तुम्हारा, इस दोस्ती के रिश्ते को बनाए रखने के लिए,
तुमने मेरी दुनिया को हंसी और खुशी से सजाया।

राजः- यह साहिल का स्कूल के समय से दोस्त रहा। वहां पर राज शांत और अपने काम में लगा रहता था। साहिल का इन्होंने स्कूल के दौरान बहुत ही साथ दिया। स्कूल में यह किसी से ज्यादा बात नहीं करता था। कॉलेज में आकर ही बोलने लगा। कॉलेज में यह एक ऐसा व्यक्तित्व था, जो हर किसी को पहली ही मुलाकात में अपना दोस्त बना लेता था। इसने कभी भी लड़कियों से बात करने में संकोच नहीं किया और साहिल जैसों को तो कई बार सोचना पड़ता था। कॉलेज में राज ने साहिल की हर काम में मदद की है चाहे फोन संबंधी काम हो या फिर अन्य काम हो। कक्षाओं में इसके आने का अलग अंदाज था, इसके गले में हेडफोन, आंखों पर चश्मा और हाथ में फोन होता था। प्रो० कुणाल वर्मा और अन्य अध्यापक भी इसके साथ मज़ाक करते रहते थे। हर तरह के व्यक्ति के साथ पहली मुलाकात में ही बात करने लगता। इसने बहुत से अध्यापकों के साथ तालमेल बना दिया था। यह साहिल के साथ कॉलेज स्तरीय, जिला स्तरीय और विश्वविद्यालय स्तरीय गतिविधियों में शामिल हुआ। आज भी साहिल की हर कार्य में मदद करता है। इसलिए साहिल राज को कहता है:-

राज मेरे दोस्त तुम्हारा दिल से आभार,
तुमने मेरे जीवन को दिया है बहुत प्यार,
हर मुश्किल में मेरे साथ खड़े होकर,
तुमने हर पल को बनाया है ख़ास।

Raj mattu
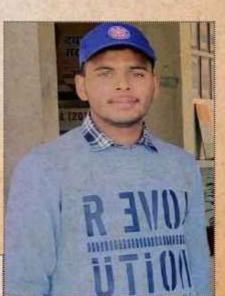
दीवेन्द्र:- इनसे साहिल की मुलाकात एनएसएस शिविर 2022-23 में हुई थी। इनका व्यक्तित्व ही बड़ा प्रोत्साहन देने वाला था। ये साहिल को हमेशा आगे बढ़ते रहने के लिए प्रेरित किया करते थे। ये आज भी साहिल के साथ जुड़े हुए हैं। जब भी कोई समस्या होती थी तो कभी भी उसका समाधान करने के लिए मना नहीं किया। इन्होंने एक बड़े भाई के रूप में हमेशा साथ दिया। इन्होंने कभी भी अपने हक़ और अधिकारों के साथ समझौता नहीं किया। ये लेखन-गायन कला में निपुण कलाकार हुए। इन्होंने बहुत से सुंदर सुंदर गीत लिखे और गाए। इन्होंने साहिल को बहुत प्यार, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा और सत्कार दिया। इनके द्वारा साहिल के जीवन में दिए गए योगदान चिरस्मरणीय और अतुलनीय हैं। इनके लिए साहिल कहते हैं:-

दीवेंद्र का साथ भी अनोखा-सा लगता है,
हर ग़म को हसंते-हंसते दूर कर देता है,
शुक्रिया मेरे दोस्त, इस खूबसूरत साथ को बनाए रखने के लिए,
तुम्हारे साथ ने हर ग़म को खुशी में बदल दिया।

गुलाब, संदीप और भुवन:- इनसे साहिल की आरंभिक मुलाकात वैसे तो प्रथम वर्ष में ही हुई थी लेकिन अच्छी तरह से ये एक-दूसरे से राज के माध्यम से मिले। ये चारों हमेशा साथ रहते थे और भुवन के अलावा दोनों फ्री फायर नामक ऑनलाइन गेम खेलते थे। भुवन को इतना शौक नहीं था। इन्होंने बहुत मौज-मस्ती के साथ कॉलेज में अपना खूबसूरत समय बिताया। इन्होंने विदाई समारोह 2024 में प्रतिभागिता की और इन तीनों को सम्मानित भी किया तथा इसके पश्चात एक दिन और ये तीनों साहिल से मिलने के लिए कॉलेज में आए। इस तरह इनके साथ जितना भी साहिल का सफ़र रहा है उससे यह बात कही जा सकती है कि इनमें सक्रियता, बुध्दिमता और सम्मान का गुण मौजूद रहा। इन्होंने अपना हर कार्य बड़े ही अच्छे ढंग से किया। इन्होंने कॉलेज में साहिल का हमेशा साथ दिया। इनके लिए साहिल अपने स्नेह बयां करते हुए कहता है:-

Bhuwan

Gulab Singh

दोस्ती से बढ़कर कोई रिश्ता नहीं होता,
तुम लोगों की हंसी से प्यारी को धुन नहीं,
तुम्हारे साथ तय किए गए सफ़र की याद है मुझे,
धन्यवाद दोस्तों, तुम्हारे साथ पर गर्व है मुझे।

आयुष:- इनसे साहिल की मुलाकात प्रथम वर्ष 2022 में हुई थी। इस दिन इनकी हिन्दी की कक्षा लगी हुई थी। आरंभ में ये कॉलेज में प्रतिदिन आया करते थे, लेकिन बाद में किसी कारण से कम आना जाना रहा । फिर ये दोनों संपर्क में रहे। जितना भी इन्होंने इस सफर में एक-दूसरे के बारे में जाना उससे यह कहा जा सकता है कि ये स्वभाव से बड़े सहायक प्रवृत्ति, सहनशील, नर्म और गर्म, सहयोगी तथा दोस्तों में सम्मानित व्यक्ति हुए। इनके साथ जो साहिल का जो अनुभव रहा वह बहुत ही खूबसूरत रहा। ये एक-दूसरे से कभी-कभी परीक्षा के दिनों में भी मिल जाते थे। इनके लिए साहिल कहता है:-

आयुष तुम्हारा दिल से आभार,
तुमने साहिल की जिंदगी को दिया है प्यार,
हर मुश्किल में देकर साथ,
हर पल को बनाया है तुमने ख़ास।

जशनः- इनसे साहिल की मुलाकात कक्षाओं में और पूर्णतः एनएसएस कैंप 2022-23 में हुई थी। इनमें भारतीय सेना में भर्ती होने का जज़्बा रहा। इसलिए साहिल इनको " जश्न आर्मी " नाम से पुकारता था। तभी से जब यह मिलते थे तो साहिल इनको "जय हिंद सर" कहकर संबोधित करता। ये बहुत ही कर्तव्यनिष्ठ और सहयोगी प्रवृत्ति के व्यक्ति हुए हैं। ये बहुत खुश और आनंद उल्लास में रहने वाले व्यक्ति हुए। ये हर अच्छे कार्य में सबसे आगे रहते थे। इन्होंने सामाजिक कार्यकर्ता, राजनीतिक कार्यकर्ता और धार्मिक कार्यकर्ता के रुप में भी काम किया। इस प्रकार कहा जा सकता है कि ये मिलनसार, ईमानदार और सम्मान योग्य व्यक्तियों में से एक रहे हैं। इनके बारे में साहिल लिखता है:-

कॉलेज की जिंदगी के सफ़र में साथी तुम बनें,
हर मुश्किल राह में साहिल के साथ तुम खड़े,
जशन तुम्हारे साथ ने मुझे हौसला दिया,
दिल से शुक्रिया मेरे प्यारे दोस्त।

राजविन्द्र:- इनके साथ साहिल की मुलाकात लगभग कॉलेज के दूसरे वर्ष के दौरान प्रीति के माध्यम से हुई थी। यह ज्यादा बातचीत नहीं करती थीं और यह बहुत गंभीर रहती थी। इनके चेहरे पर गंभीरता ज्यादा रहती थी। जैसे जैसे बातचीत होने लगी वैसे वैसे इनके स्वभाव में परिवर्तन आया। जितना भी इनके बारे में साहिल जान पाया था कि यह बहुत मिलनसार, ईमानदार, वफादार और बड़ों का आदर करने वाली लड़की रही। यह कॉलेज के कार्यक्रमों में शामिल हुआ करती थी। जब ये आपस में घुल-मिल गए थे तब एक-दूसरे के साथ मज़ाक करते थे। इन्होंने कभी भी अपने हक़ और अधिकारों के साथ समझौता नहीं किया। यह स्वभाव से बहुत ही शांत थीं। इन्होंने कॉलेज स्तरीय और जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता की। यह दोस्ती का सही अर्थ समझती थी और लोगों के साथ भावनात्मक रूप से जुड़ जाती थी। इनकी दोस्ती के प्रति आभार व्यक्त करते हुए साहिल कहता है:-

मेरी हर मुस्कान के पीछे राजविंदर का ही तो हाथ है,
हर खुशी में शामिल, तुम्हारा साथ है,
तुम्हारी दोस्ती के बिना ये कॉलेज की जिंदगी अधूरी-सी लगती है,
धन्यवाद मेरी दोस्त, तुम्हारे होने से रोशनी-सी लगती है।
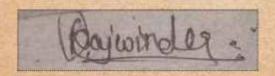
दिव्या:- इनकों साहिल ने कॉलेज में देखा तो बहुत लेकिन हम एक-दूसरे से कभी-कभी बात करते थे। यह किसी अपरिचित व्यक्ति से बात नहीं करती थी। यह अपनी सहेली राजविंदर के साथ रहती थी और उसी के कारण ही साहिल का परिचय सर्वप्रथम दिव्या से हुआ। इन्होंने पहली बार महिला दिवस के उपलक्ष में मंच पर अपने विचार साझा किए। तब से इनका संपर्क हर दिन होने लगा। जितना भी साहिल ने अपने कॉलेज के सफ़र में दिव्या के बारे में जाना है उसके आधार पर कहा जा सकता है कि यह एक नर्म, सहनशील, निष्ठा से परिपूर्ण, कर्मठ, ईमानदार, वफादार और सम्मान योग्य दोस्त हैं। इनका साहिल के साथ व्यवहार बड़ा ही प्रेम-भाव रखने वाला रहा है। इन्होंने "पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम" के तहत एक नाटक में प्रतिभागिता की थी। इनका बातचीत करने का ढंग साहिल को बहुत पसंद आया। यह ऐसी लड़कियों में से एक रही जिन्होंने बिना किसी हिचकिचाहट के अपनी बातों को स्पष्ट रूप से कहा। दूसरी ओर इन्होंने साहिल को इसलिए भी प्रभावित किया क्योंकि यह आत्मनिर्भर थी यह अपना खर्च बच्चों को पढ़ाकर चलाया करती थीं। तभी साहिल इनके योगदान के लिए कहते हैं:-

दिव्या तुमने मुझे अपना ख्याल रखना सिखाया,
फिर ज्ञान का मार्ग दिखाया,
आपके बिना यह मुमकिन नहीं था,
आज यह जो है, वो आपने मुझे बनाया,
जिसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

रीतू (आलू), गुरप्रीत और सिमरन:- इनसे साहिल की मुलाकात एनएसएस शिविर 2023-24 में हुई थी। आरंभ में इनके बीच इतनी बातचीत नहीं होती थी लेकिन जैसे जैसे एक दूसरे के बारे में जानना शुरू किया वैसे वैसे ये घुल-मिल गए। यह स्वभाव से बहुत मज़ाकिया, कोमल, नरम, सहनशील और भ्रमणशील प्रवृत्ति की लड़कियां थी। इनको जब भी साहिल देखता था तो कभी किसी तरह की गतिविधियां जैसे मज़ाक करना व उसकी वीडियो बनाना और कभी पढ़ाई करना तथा कभी किसी कार्यक्रम में शामिल होना आदि इनकी दिनचर्या थी। इस प्रकार कहा जा सकता है कि ये मिलनसार, ईमानदार, वफादार, संस्कार प्रिय और साहसी लड़कियां थी। इनकी दोस्ती के लिए साहिल कहता है:-

तुम्हारी दोस्ती का साथ मिला,
तो हर ग़म भुला दिया,
आपकी मुस्कान ने साहिल की जिंदगी को,
खुशहाल बना दिया।
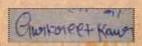
Simrandeep

गुंत्ताज और परम सिंह:- इनसे साहिल की मुलाकात एनएसएस शिविर 2023-24 में हुई थी। इन शिविरों में ये साथ-साथ रहे और एक-,दूसरे के बारे में जाना तथा आपस में घुल-मिल गए। इनका ऐसा था कि जब भी ये इकट्ठे होते थे तो यह पता नहीं चलता था कि कौन बड़ा और कौन छोटा। ये आपस में मज़ाक करते रहते थे। ये बहुत ही खुशमिजाज और मजाकिया प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। इन दोनों ने कॉलेज में हर तरह की मदद की थी, चाहे वह फोन से संबंधित हो या अन्य किसी भी तरह की। इन्होंने कभी भी अपने हक़ और अधिकारों के साथ समझौता नहीं किया। इन सब बातों से यह कहा जा सकता है कि ये मिलनसार, ईमानदार, वफादार, कर्तव्यनिष्ठ, बड़ों को सम्मान देने वाले और सम्मान योग्य व्यक्तियों में से एक रहे हैं। इनके द्वारा मेरे जीवन में दिया गया योगदान चिरस्मरणीय है। साहिल और गुंत्ताज ने कॉलेज स्तरीय कार्यक्रमों, जिला स्तरीय रेडक्रास प्रशिक्षण शिविर, प्रतिभा खोज प्रतियोगिता और विश्वविद्यालय स्तरीय गतिविधियों में भाग लिया। इन्होंने बहुत मौज मस्ती की। इनके साथ के लिए साहिल कहता है:-

दिल की गहराईयों से गुंत्ताज सिंह और परम सिंह का शुक्रिया,
तुम लोगों ने मेरी जिंदगी को ख़ास बना दिया।
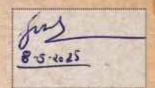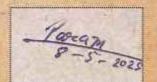
राहुल:- इनसे साहिल की आरंभिक बातचीत द्वितीय वर्ष में ही हुई थी लेकिन अच्छी तरह से जान पहचान नहीं थीं। सबसे पहले इन्होंने राजनीति विज्ञान विषय की कक्षा में एक-दूसरे से बात की थी तथा यह भी कभी कभी होती थी क्योंकि जिस समय साहिल की कक्षा लगती थी उसी समय पर राहुल की दूसरे विषय की कक्षा होती थी। लेकिन फिर भी इनके बीच बातचीत नहीं रुकी। इन्होंने हॉस्टल में भी तस्वीरें खिंचवाई और फिर विदाई समारोह में भी ये एक-दूसरे के साथ रहे। राहुल की एक प्रमुख विशेषता यह है कि इनको गणित विषय में अत्यधिक रुचि रही। इस तरह कहा जा सकता है कि राहुल एक मेहनती, परिश्रमी और सम्मान योग्य दोस्त रहा है। इनके लिए साहिल लिखता है:-

राहुल से दोस्ती करके साहिल ने पाया है,
हर खुशी का ख़ज़ाना और हर ग़म भुलाना,
शुक्रिया मेरे दोस्त ऐसी दोस्ती निभाने के लिए।

लवप्रीत सिंह:- इनसे साहिल की मुलाकात वैसे तो प्रथम वर्ष में ही हुई थी लेकिन अच्छी तरह से ये एक-दूसरे से द्वितीय वर्ष में ही मिल पाए। उन्होंने एक दूसरे के व्यक्तित्व के बारे में जाना। इस तरह ये प्रतिदिन एक दूसरे से संपर्क कर ही लेते थे। इनकी वाणी में कोमलता और सम्मान दिखाई देता रहा। ये कभी भी किसी से गरम स्वभाव से बात नहीं करते थे। इन्होंने हमेशा साहिल का मार्गदर्शन किया और किसी भी समस्या के समय इन्होंने एक-दूसरे का साथ भी दिया। जब लवप्रीत साहिल की जिंदगी में आया था, तब भी वह बहुत शरीफ़ और शांत था और आज भी वह अपनी इसी प्रवृत्ति को बनाए हुए है। आज यदि कोई समस्या होती है तो ये दोनों एक दूसरे की सहायता करते हैं। इनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर साहिल कहता है:-

लवप्रीत ने ही दिया सहारा हर मुश्किल घड़ी में,
तुम्हारे बिना अधूरी है साहिल की जिंदगी,
हर दम तुम्हारा साथ रहा,
दिल शुक्रिया मेरे दोस्त इस खूबसूरत साथ के लिए।

हसनप्रीत और किरण:- इनसे साहिल की मुलाकात वैसे तो द्वितीय वर्ष से हुई थी लेकिन तृतीय वर्ष में अच्छी तरह से जान पहचान हो गई थी। ये दोनों इकट्ठी रहती थी। इनका स्वभाव हंसमुख था। इनमें नम्रता और गर्मता का समन्वय दिखाई दिया। वहीं ये दोनों सहनशील व्यक्तित्व की धनी भी थी। इन्होंने हर कार्यक्रम में अपनी भागीदारी सुनिश्चित की। इनमें सक्रियता का गुण भी देखा जा सकता है। ख़ासकर हसनप्रीत ने कॉलेज स्तरीय और जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता की। यही नहीं साहिल के साथ रेडक्रास प्रशिक्षण शिविर में भी साथ रही। ये दोनों स्वभाव से बड़ी सहायक, मिलनसार और सम्मान योग्य है। इनके जीवन में योगदान के लिए साहिल कहता है:-

हसन और किरण जैसी दोस्त यदि मेरी जिंदगी में न आए होती,
तो हर खुशी का रंग फीका होता,
तुम्हारी दोस्ती के लिए दिल से शुक्रिया,
तुम लोगों से बेहतर कोई और नसीब नहीं होता।

Kirandeep Kaur

Hasanpreet Kaur 8/5/25

रमन और नवजोत:- ये दोनों बहनें हैं। इनसे साहिल की मुलाकात द्वितीय वर्ष में हुई। इनका स्वभाव आग और पानी की तरह है। रमन की विशेषता यह रही कि वह अपनी बात पर सहमति बहुत कठोर ढंग से लेती थी, जैसे कि एक वीरता और साहस की प्रतिमा रही। इन्होंने अपने अधिकारों के लिए हमेशा आवाज उठाई। दूसरी ओर नवजोत सहनशील, निष्ठा से परिपूर्ण, कर्मठ, ईमानदारी से भरी और कर्मशील प्रवृत्ति की लड़की रही है। इसलिए इनको नर्म और गर्म कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इनका स्वभाव इनके चरित्र के अनुरूप था। इन्होंने कॉलेज स्तरीय और जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता की। इन सबके बावजूद इनमें कोमलता, नम्रता, सहनशीलता, सद्भावना, नटखटपन और सम्मान की भावना देखने को मिलती है। साहिल का इनके साथ जितना भी सफ़र रहा है उसके आधार पर कहा जा सकता है कि ये दोनों अच्छी दोस्त और अध्यापकों का सम्मान करने की प्रवृत्ति से ग्रसित रहीं। इन दोनों के लिए साहिल कहता है:-

रमन और नवजोत के साथ की कद्र कैसे करें साहिल,
कॉलेज का हर पल इनकी दोस्ती के बिना अधूरा-सा लगता है,
शुक्रिया मेरे दोस्त, हर कदम पर बहुत साथ देने के लिए,
तुम लोगों ने मेरी जिंदगी को हंसी खुशी से भर दिया।

Ramandeep kaur

Navjot kaur

अमन:- इनके साथ साहिल की मुलाकात द्वितीय वर्ष में ही हुई थी। आरंभ में यह किसी से ज्यादा बात नहीं करती थी तथा अपने आप में ही कोई रहतीं थीं। जैसे जैसे ये एक-दूसरे के संपर्क में आए, वैसे वैसे साहिल को इनके स्वभाव और चरित्र के बारे में जानकारी मिली। इन्होंने कॉलेज स्तरीय और जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता की। यह सच्चे अर्थों में कलाकारी की मिसाल रही। यह बहुत ही खूबसूरत चित्रकार रही है। साहिल ने जितना भी इनके बारे में जाना उससे कहा जा सकता है कि यह बहुत नरम गरम स्वभाव, ईमानदार, वफादार, काम के प्रति जागरूक और कला के प्रति प्रेम तथा दोस्तों के प्रति सम्मान की प्रवृत्ति की धनी है। इनके लिए साहिल कहता है:-

Amandeep Kaur

अमन की ये कैसी दोस्ती है,
हर खुशी में इसी का हाथ होता है,
शुक्रिया कहां से शुरू करूं,
जब हर लम्हा तुम्हारी दोस्ती के साथ होता है।

दिव्या, रीतू और मनीषा:- इनसे साहिल की आरंभिक मुलाकात वैसे तो द्वितीय वर्ष में ही हुई थी लेकिन अच्छी तरह से ये सभी उस दिन मिले जब डीएवी कॉलेज, पेहवा में पृथुदक उत्सव आयोजित किया गया जिसमें इन्होंने प्रतिभागिता की। इस अवसर पर साहिल के साथ मनीषा और दिव्या भी साथ में रहीं। इन्होंने अपनी अपनी विधाओं के अंतर्गत प्रतिभागिता की। रीतू के साथ साहिल का परिचय इन्हीं के ज़रिए हुआ था। तब इनके बीच इतना संपर्क नहीं था लेकिन तृतीय वर्ष में वार्तालाप होने लगी। इन्होंने कॉलेज स्तरीय और जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता की। रीतू तो साहिल के साथ रेडक्रास प्रशिक्षण शिविर और जिला स्तरीय प्रतिभा खोज प्रतियोगिता में भी साथ रही। ये तीनों स्वभाव से बड़ी सहायक, मिलनसार, नम्रता, सहनशील और सम्मान योग्य है। ये अपने काम से काम रखती थी और किसी से भी ज्यादा बात नहीं करती थी। इनके लिए साहिल कहता है:-

जब भी साहिल को कहीं कठिनाई आईं,
तो दिव्या, रीतू और मनीषा ने साथ दिया,
इनसे बेहतर दोस्त कहीं ढूंढ पाना मुश्किल है,
इनके साथ से सब कुछ आसान लगता है,
शुक्रिया कि तुम लोगों ने दोस्त का फर्ज निभाया है।

जशनप्रीत कौर:- इनसे साहिल की आरंभिक जान पहचान इतिहास की कक्षाओं में हुई और अच्छी तरह से तृतीय वर्ष में प्रवेश कर हुई। वैसे साहिल इनको बहुत पहले से जानता था लेकिन अच्छी तरह से हाल ही के महीनों में ही जान पाया। इनको इतिहास की कक्षाओं में जब-जब लिखना पड़ता तो ज्यादा समय हो जाने पर डॉ० राजेन्द्र सिंह को कक्षा खत्म करने के लिए सबसे पहले यही कहा करती थीं। जितना भी साहिल ने कॉलेज के दौरान इनको जाना है उससे यह तो अवश्य ही कहा जा सकता है कि इनमें बड़ों के प्रति सम्मान, दोस्तों के प्रति प्रेम भाव, ग़लत के खिलाफ आवाज, भावुक और काम के प्रति स्नेह झलकता है। इनके बारे में साहिल लिखते हैं:-

खुशियों में जो हंसती है,
ग़म में जो साथ देती है,
वह जशनप्रीत की तरह सच्ची दोस्त होती है,
धन्यवाद मेरी दोस्त, तुम्हारी दोस्ती के लिए जिसको तुमने बरकरार रखा है।

कोमल:- इनसे साहिल की आरंभिक मुलाकात वैसे तो अच्छी तरह से हाल ही में हुई लेकिन इनके बारे में साहिल ने द्वितीय वर्ष में जाना। ये इनको ज्यादातर राजनीति विज्ञान और इतिहास की कक्षाओं में ही देखता था। इनसे साहिल की जान पहचान राज के माध्यम से हुई थी। इन्होंने कॉलेज में होने वाले कार्यक्रमों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया और सम्मान भी प्राप्त किया। ये कार्यक्रम चाहे प्रतिभा खोज प्रतियोगिता हो या भाषण प्रतियोगिता हो। इस तरह इनके बारे में यह बात तो अवश्य कहीं जा सकती है कि यह एक प्रभावशाली, रचनाशील, कर्मठ, ईमानदार, वफादार और काम के प्रति जुनूनी तथा दोस्तों में सम्मानित व्यक्तित्व की धनी है। इनके लिए साहिल का कहना है:-
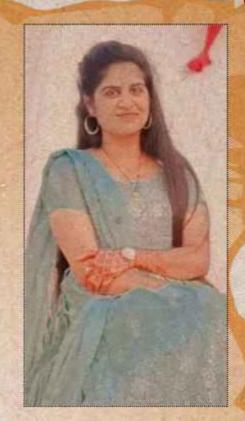
Komal
08/05/25

हमारी दोस्ती का रिश्ता है सबसे प्यारा,
कोमल की दोस्ती के बिना है कॉलेज-जीवन अधूरा,
शुक्रिया हर मुश्किलात में मेरा साथ देने के लिए,
तुम्हारे साथ से ही हर कार्य आसान लगता रहा।

साक्षी:- इनसे साहिल की मुलाकात वैसे तो द्वितीय वर्ष में राजनीति विज्ञान की कक्षा में हुई थी लेकिन अच्छी तरह से ये तब मिले जब इन्होंने जिला स्तरीय प्रतिभा खोज प्रतियोगिता में प्रतिभागिता करने के लिए एक ग्रामीण परिवेश से संबंधित नाटक तैयार किया। इस दौरान इन्होंने बहुत मौज-मस्ती करते नाटक की तैयारी की। इनकी विशेषता यह थी कि यह कॉलेज में सबसे अलग थी। यह स्वभाव से बड़बोली, नरम-गरम, परिश्रमी, साहसी और जिज्ञासु प्रवृत्ति की रही है। इन्होंने कॉलेज में होने वाले कार्यक्रमों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। फिर भी इनके साथ जितना भी साहिल का अनुभव रहा उससे यह साबित होता है कि यह मज़ाकीय स्वभाव और सभी साथियों के साथ सद् व्यवहार करने वाले व्यक्तित्व की धनी है। इनके बारे में साहिल लिखता है:-

सच्चे दोस्त होते हैं बड़े अनमोल,
उनके बिना ये कॉलेज की दुनिया लगती है नीरस,
हर पल, हर क्षण साक्षी तुम्हारा साथ रहा ख़ास,
दिल से शुक्रिया तुम्हारी दोस्ती के लिए।

सिमरनजीत सिंह:- इनसे साहिल पहली बार एनएसएस शिविरों 2023 में मिला था। यह देखने में बहुत साधारण और किसी से ज्यादा मेल मिलाप रखने वाले प्रतीत होते था, लेकिन जब इनके संपर्क में साहिल आया तो यह बहुत बोलने वाले, काम के प्रति सम्मान प्रकट करने वाले, बड़ों का आदर करने वाले तथा दोस्तों को सम्मान योग्य समझने वाले प्रतीत हुआ। यह बहुत ही खुशमिजाज और मजाकिया प्रवृत्ति का व्यक्ति था। यह साहिल के साथ कॉलेज स्तरीय एनएसएस शिविर और विश्वविद्यालय स्तरीय कार्यक्रम में शामिल हुआ। ये आज भी अपनी इन प्रवृत्तियों को कायम रखे हुए हैं। इन्होंने कॉलेज में हर तरह की मदद की थी, चाहे वह फोन से संबंधित हो या अन्य किसी भी तरह की। इनके साथ को सम्मानित करते हुए साहिल लिखता है:-

जब मुझ पर कठिनाई आईं, तुमने उसका समाधान किया,
जब भी मैं थमा, सिमरनजीत ने आगे बढ़ाया,
ऐ दोस्त तेरा शुक्रिया कैसे बयां करूं,
तेरे साथ ने मेरी जिंदगी को राह दी।
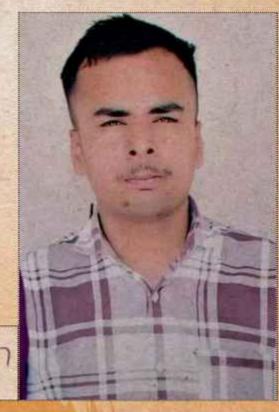
Simranjeet Singh

खुशबू:- इनसे साहिल का परिचय सर्वप्रथम द्वितीय वर्ष में एनएसएस शिविर 2023 और बाद के दिनों में मुलाकात हुई थी। इन शिविरों में इन्होंने खूबसूरत भजन और गीत गाए थे। इससे इनकी संगीत और कला के प्रति प्रेम और सम्मान झलकता है। भावनात्मक दृष्टिकोण संबंधी विचार बहुत ही उच्च रहे। इनको ही हमेशा एनएसएस शिविरों में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इन्होंने कॉलेज में होने वाले कार्यक्रमों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया और सम्मान भी प्राप्त किया। कॉलेज की हर गतिविधि में ये एक-दूसरे के सहयोग के लिए हमेशा तैयार रहते थे। इनका सभी के साथ अच्छा व्यवहार रहा। इनकी वाणी में कोमलता, मिठास और खुशबू दिखाई देती रही। यह अपनी इन प्रवृत्तियों को आज भी कायम रखें हुए है। इनके लिए साहिल ने लिखा है:-

इस दोस्ती के रिश्ते में खुशबू-सी बसी है,
सच्चे दोस्त की हर दुआ में असर भी है,
हर सुख और दुःख में मेरे साथ खड़ी रही,
ऐ दोस्त, तेरी यह करामात अमूल्य है।

पूजा:- इनसे साहिल की मुलाकात वैसे तो हाल ही के महीनों में हुई और जान पहचान एनएसएस शिविर 2024 से शुरू हुई। इनको साहिल ने सबसे पहले एनएसएस के एक दिवसीय शिविर (23-11-2024) में अपनी नृत्य प्रस्तुति देते हुए देखा। इससे साहिल को इनका नृत्य कला के प्रति प्रेम और सम्मान दिखाई दिया। वहीं दूसरी ओर इन्होंने जिला स्तरीय प्रतिभा खोज प्रतियोगिता और कॉलेज स्तरीय एनएसएस शिविरों में अपनी भागीदारी सुनिश्चित की। इन्होंने साहसिक कार्यों में सफल प्रदर्शन किया और यह आज भी कार्यरत हैं। इन सब के आधार पर कहा जा सकता है कि इनके भावनात्मक दृष्टिकोण संबंधी विचार बहुत ही उच्च रहे। यह बहुत ही खुशमिजाज और मजाकिया प्रवृत्ति की लड़की रही। साहिल का इनके साथ जितना भी सफ़र रहा है उसके आधार पर कहा जा सकता है कि ये दोनों अच्छी दोस्त और अध्यापकों का सम्मान करने की प्रवृत्ति से ग्रसित रहीं। जैसे जैसे ये एक-दूसरे के संपर्क में आए, वैसे वैसे साहिल को इनके स्वभाव और चरित्र के बारे में जानकारी मिली। इनके लिए साहिल कहता है:-

सुश्री पूजा
बी० ए० प्रथम वर्ष
डीएवी कॉलेज, चीका
(कैथल)

पूजा तुम्हारे साथ ने मेरी दूर की हर समस्या,
तुम्हारी हंसी से ग़म गए सब दूर,
तुम्हारा रहा है हर पल साथ,
दोस्त तुम्हारा शुक्रिया 'साहिल' कैसे अदा करे।

अनु, तनु और पायल:- इनको त्रिमूर्ति के रूप में जाना जा सकता है। इसके पीछे यह कारण है कि ये तीनों कॉलेज में हमेशा साथ रहती और पक्की सहेलियां हैं। इनसे साहिल की मुलाकात वैसे तो एनएसएस के एक दिवसीय शिविर (08-03-2025) में हुई थी। लेकिन अच्छी तरह से तब हुई थी जब इन्होंने "विदाई समारोह" का आयोजन करने के लिए तैयारियां कर रहे थे। इससे पहले शिविर में इन्होंने महिला दिवस को मनाने के लिए सेमिनार हॉल की सजावट किया तब इन्होंने बहुत मौज-मस्ती की। इस दौरान इनको मंच संचालन का ज्ञान दिया। इस दिन तो सिर्फ अनु और पायल को ही साहिल मिल पाया था। इसके बाद विदाई समारोह के आयोजन के दौरान तनु से परिचय हुआ। इससे कहा जा सकता है कि इनमें साहस बहुत है। फिर इन्होंने उपहार खरीदे, खाने का इंतजाम किया और सेमिनार हॉल की सजावट की। इन सभी कार्यों में इन्होंने बहुत सहयोग किया। यहां पर इनकी ईमानदारी, वफ़ादारी, परिश्रम और लगन दिखाई दी। इन्होंने विदाई समारोह को संपन्न किया। इन्होंने कॉलेज में होने वाले कार्यक्रमों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया और सम्मान भी प्राप्त किया। कॉलेज की हर गतिविधि में ये एक-दूसरे के सहयोग के लिए हमेशा तैयार रहते थे। इन सबके बावजूद कहा जा सकता है कि इनके स्वभाव में बड़बोली, नरम-गरम, परिश्रमी, साहसी और जिज्ञासु प्रवृत्ति की रही हैं। ये आज भी अपनी इन्हीं प्रवृत्तियों के कारण लोकप्रिय हैं। इनकी दोस्ती के लिए साहिल कहता है:-

हर खुशी के लिए तुम्हारी दोस्ती ही तो जिम्मेदार है,
हर हंसी के पीछे अनु तुम्हारा ही तो हाथ है,
तुम्हारे बिना हमारी दोस्ती पूरी नहीं होती,
धन्यवाद ऐ दोस्त तुम्हारे साथ से जिंदगी पूरी लगती है।
हर रास्ते पर तनु का साथ ही दिखाई दिया,
तुम्हारी दोस्ती के बिना जीवन अधूरा-सा लगता है,
तुम्हारी दोस्ती पर गर्व है मुझे,
जिसके बिना हमारी कॉलेज यात्रा अधूरी है।
जब से पायल जैसी दोस्त मिली,
साहिल का हर कार्य सुगम हुआ,
तुम्हारी हंसी ने इस दोस्त को खुशनुमा बना दिया,
शुक्रिया है तुम्हारे साथ के लिए।
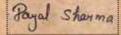
Anu Devi

Tannu Devi

इस तरह साहिल का डीएवी कॉलेज, चीका (कैथल) में छात्र के रूप में सितंबर, 2022 से शुरू हुआ सफ़र जुलाई, 2025 को संपन्न हुआ। यह सफ़र बहुत ही खूबसूरत, संघर्षों और अनुभवों से भरा रहा। आरंभ में जब वह इस कॉलेज में आता था तो ऐसा लगता था कि भगवान ने कैसी जिंदगी दी है? लेकिन बाद में विचारधारा परिवर्तित हो गई और ऐसा लगा कि इस तरह की जिंदगी किसी भाग्यशाली को ही मिलती है। इस तीन वर्ष के दौर ने साहिल की जिंदगी को खुशहाल बनाया। यह दौर उसे जीवनभर याद आयेगा। इस सफ़र में साहिल को बहुत से सम्मानित व्यक्तित्व और महान् व्यक्तियों से भेंट करने का मौका मिला। ये सभी साहिल के इस दौर के जीवन के प्राण तत्व कहे जा सकते हैं। इनकी छत्रछाया ने साहिल को हमेशा कड़ी धूप से भी बचाने का प्रयास किया है। इनके मार्गदर्शन से साहिल को हमेशा ज्ञान और सम्मान दिया। इन सभी के आधार पर कहा जा सकता है कि यह दौर साहिल के जीवन की चुनौतियों को अवसर में बदलने के लिए काफी सहायक रहा है। यह दौर साहिल की ईमानदारी, वफ़ादारी, परिश्रम, लगन, कर्मठता, प्रेरणा, सहयोग और नवाचार की मिसाल बन गया है । साहिल ने इस दौरान जो कुछ भी पाया वह उसके अध्यापकों, गुरुजनों और मित्रों के मार्गदर्शन व स्नेह का ही परिणाम है। यदि ये न होते तो साहिल का कॉलेज का सफ़र नीरसता के साथ बीतता। जो इन्होंने यहां पर अपना कर्म किया वह इन महान् व्यक्तियों के प्रयासों और प्रयोगों के कारण ही संभव हो पाया है। कॉलेज के इस दौर में साहिल ने मानवता, शिक्षा, भाईचारे, बंधुत्व, प्रेम, सहनशीलता, रिश्तों की अहमियत, बड़ों का आदर करना, शब्दों का महत्व और सिद्धांतों की व्यवहारिकता इत्यादि के बारे में जाना और जीवन में लागू करने का प्रयास किया। यह जीवन साहिल के द्वारा किए गए अथाह कार्यों और परिश्रम का परिचायक बन गया। कॉलेज के दिनों से ही साहिल अपने दोस्तों के बीच एक खास जगह रखता था। वह सिर्फ़ एक दोस्त नहीं, बल्कि एक मार्गदर्शक, एक प्रेरणास्रोत और एक अटूट सहारा था। उसके दोस्तों का जीवन उसकी दोस्ती से कई तरह से समृद्ध हुआ। राज, साहिल की प्रेरणा से ही एक मेहनती छात्र बना। साहिल हमेशा उसे पढ़ाई के महत्व के बारे में समझाता और मुश्किल विषयों में उसकी मदद करता। साहिल के साथ मिलकर पढ़ने से राज के अंकों में सुधार आया और उसने अपनी परीक्षाओं में अच्छा प्रदर्शन किया। साहिल ने उसे कभी भी निराश नहीं होने दिया और हमेशा उसका हौसला बढ़ाया। दूसरी ओर, प्रीति एक अंतर्मुखी लड़की थी जो अपनी भावनाओं को आसानी से व्यक्त नहीं कर पाती थी। साहिल ने धीरे-धीरे उसका आत्मविश्वास बढ़ाया। उसने प्रीति को कॉलेज के कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया और उसे अपनी राय खुलकर रखने के लिए प्रेरित किया।

साहिल की दोस्ती ने प्रीति को अपनी खोल से बाहर निकलने और दुनिया का सामना करने की हिम्मत दी। साहिल की सबसे बड़ी खूबी यह थी कि वह अपने दोस्तों की ज़रूरतों को बिना कहे समझ जाता था। जब किसी दोस्त को कोई परेशानी होती, तो साहिल हमेशा सबसे पहले मदद के लिए पहुँचता। उसने कभी भी अपने दोस्तों को अकेला महसूस नहीं होने दिया। उसकी सकारात्मक ऊर्जा और हमेशा मदद करने की भावना ने उसके दोस्तों के जीवन में एक अमिट छाप छोड़ी। कॉलेज के बाद भी, साहिल ने अपने दोस्तों के साथ अपना रिश्ता बनाए रखा। वे अक्सर मिलते-जुलते रहते और एक-दूसरे के सुख-दुख में साथ देते। साहिल का अपने दोस्तों के जीवन में योगदान सिर्फ़ तात्कालिक नहीं था, बल्कि उसने उनके व्यक्तित्व को आकार देने और उन्हें बेहतर इंसान बनने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उसके दोस्त हमेशा उसके आभारी रहेंगे कि उन्हें साहिल जैसा दोस्त मिला। साहिल ने अपने दोस्तों को सिखाया कि सच्ची दोस्ती क्या होती है। एक ऐसा बंधन जो मुश्किलों में साथ देता है और खुशियों को दोगुना कर देता है। यह साहिल की सफलता का सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव रहा। इस दौरान साहिल को उन अवसरों की पहचान करने में मदद मिली, जिसमें लोगों को कठिनाई आती थी। इस दौरान साहिल ने एनएसएस के साथ जुड़कर सेवा, समर्पण, विनम्रता और समन्वय की भावना का विकास किया। यहां पर साहिल ने अनुभव किया कि कभी-कभी किसी व्यक्ति का जीवन बदलने के लिए दयालुता और देखभाल का केवल एक प्रयास ही काफी होता है। इस तरह साहिल को सफलता का अर्थ ज्ञात हुआ कि मददगार, परिश्रमी, देखभाल करने वाला, साहसी, ईमानदारी और कड़ी मेहनत करना आदि के द्वारा सफलता प्राप्त की जा सकती है। इस तरह साहिल के कॉलेज के इस दौर ने साहिल की सोच, व्यवहार और विचारों को प्रवाह दिया। यह साहिल का एक सुखद, शांतिमय, आनंद और प्रेरणादायक अनुभव रहा जो हमेशा याद रहेगा। साहिल ने उन सभी महान् व्यक्तियों, उच्च कोटि के कर्मठ और सम्मान योग्य गुरूजनों, अंकलों और दोस्तों को तह-दिलों धन्यवाद अदा किया कि उन्होंने साहिल के सुख-दुख में साथ दिया और स्नेह, प्यार, ज्ञान और सम्मान दिया अतः आपने "कॉलेज और संघर्ष" पुस्तक से "साहिल" नामक विद्यार्थी के कॉलेज जीवन और इसमें किए गए संघर्षों तथा इसके परिणामों के बारे में जानने को मिला है। यह जीवन साहिल की स्थिति को और ज्यादा मजबूत बनाने में सहायक सिद्ध हुआ है। इस पुस्तक का शीर्षक नायक की स्थिति और चरित्र के सर्वथा अनुकूल है। जिस तरह साहिल का कॉलेज और कॉलेज के आगे का जीवन संघर्षमय जीवन रहा है। वह अवश्य ही आगामी पीढ़ियों एवं विद्यार्थियों के लिए चिरस्मरणीय रहेगा और प्रेरणा का स्त्रोत बनेगा।

जब वह कॉलेज में आया था तो उसकी स्थिति क्या थी और जब यहां से गया तो क्या स्थिति बन गई थी? उसने कठिनाइयों और समस्याओं का सामना बड़े सकारात्मक दृष्टिकोण से किया। इन्होंने कभी सोचा नहीं था कि वह निष्ठा, ईमानदारी, वफ़ादारी, परिश्रम, लगन, कर्मठता, सत्यता, साहस और आत्मविश्वास की मिसाल तथा एक दिन किसी का मार्गदर्शक व पथ-प्रदर्शक बन जायेगा। इसलिए इनको अपना मार्गदर्शक कहना मेरे लिए बड़े गर्व की बात होगी। आप भी साहिल के जैसा विद्यार्थी बनने के प्रयास कर सकते हैं और अपने कॉलेज या विद्यार्थी जीवन को खुशहाल बना सकते हैं। यदि आपके अंदर साहिल का एक गुण भी आ जाए तो मुझे बहुत खुशी होगी कि जो मैंने साहिल के बारे में लिखा है वह सच और कारगर है तथा मेरा किताब लिखना व्यर्थ नहीं गया। इस तरह साहिल इस कथानक का नायक भी कहा जा सकता है क्योंकि उसके चरित्र के इर्द-गिर्द यह कहानी घूमती है। मुझे विश्वास है कि साहिल की इस कहानी को पढ़ने से उन लोगों के मन में जो कॉलेज और संघर्ष के प्रति ग़लत धारणा बनी हुई थी उसका समाधान अवश्य ही हुआ होगा। इस तरह कहानी के शीर्षक की सार्थकता "साहिल" के चरित्र के माध्यम से सिद्ध होती है।
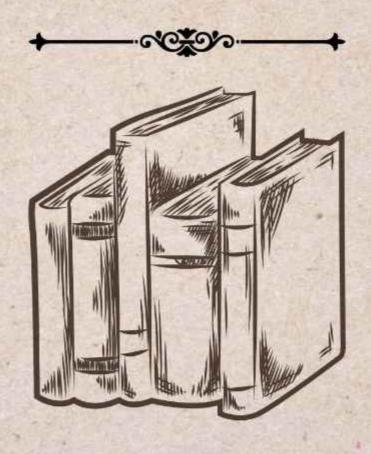
समापन

मेरी "**कॉलेज और संघर्ष**" नामक पुस्तक पठनीय ही नहीं संग्रहणीय भी है। इस पुस्तक में उनके सभी संदेश विचारों की रोशनी से परिपूर्ण हैं। इनमें उनके अनुभवों की अनुपम छाया समाहित है। वे जैसा सोचते हैं, वैसा लिखते हैं। मुझे विश्वास है कि उनके लेखों की सद्यः प्रकाशित इस पुस्तक को अनगिनत पाठक मिलेंगे। यह उनके जीवन को सार्थक बनाने का माध्यम बनेगी। ऐसा होने पर ही सांस्कृतिक स्फुरण होता है। जो फिर प्रवाह बनता है। मुझे आशा है कि प्यार, ज़िन्दगी और ख्वाबों के ताने बाने से बुनी एक मर्मस्पर्शी कहानी पढ़कर आपके जीवन में बहुत सारे परिवर्तन होंगे और विभिन्न तरह के कार्यक्रमों, अध्यापकों और दोस्तों के साथ समन्वय स्थापित होगा।

"हयात ले के चलो कायनात ले के चलो
चलो तो सारे ज़माने को साथ ले के चलो"